

पंजाब सहित उत्तर भारत के गैंगस्टर्स को मिलेगा कालापानी

एनआईए और एमएचए के बीच लंबी चर्चा के बाद लिया गया फैसला

» लिस्ट में लॉरेंस बिश्नोई के अलावा जिन प्रमुख गैंगस्टर्स पर नजर है वो हैं हाकिम बाबा छेन्, कौशल चौधरी, अमरीक जो कि दिल्ली, पंजाब और हरियाणा की जेल में बंद हैं...

अपने सिडिकेट को संचालित कर रहे हैं। ऐसे में इन्हें यहाँ की जेलों से निकालकर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की जेलों में शिफ्ट कर दिया जाए। इंदर दिल्ली पंजाब हरियाणा और उत्तर प्रदेश में जेल प्रशासन की ओर से करीब 150 गैंगस्टर्स की सूची भी तैयार की जा रही है। लिस्ट में लॉरेंस बिश्नोई के अलावा जिन प्रमुख गैंगस्टर्स पर नजर है वो हैं हाकिम बाबा छेन्, कौशल चौधरी, अमरीक जो कि दिल्ली, पंजाब और हरियाणा की जेल में बंद हैं। कैदियों के स्थानांतरण को लेकर मौजूदा नियम की भी समीक्षा की जा रही है जिसके तहत सिर्फ सजायाफता कैदियों को एक जेल से दूसरी जेल ट्रांसफर करने का प्रावधान है, ज्यादातर गैंगस्टर अंडर ट्रायल हैं इसलिए मौजूदा कानूनी प्रावधान का भी आकलन किया जा रहा है। इससे पहले एनआईए ने इन गैंगस्टर्स को दक्षिण भारत के राज्यों में ट्रांसफर



कने की सलाह दी थी। रिपोर्ट के मुताबिक, एनआईए क प्रस्ताव पर जब चर्चा शुरू हुई तो पता चला कि यह एक काफी लंबी प्रक्रिया है क्योंकि इसके लिए राज्य सरकारों की अनुमति लेनी होगी। वहीं, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एक केंद्र शासित प्रदेश हैं और इसका प्रशासन केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत आता है। इसलिए यहाँ कोई अड़चन नहीं आने वाली है। यही वजह है कि एनआईए ने अब गैंगस्टर्स को

अंडमान-निकोबार में भेजने का प्रस्ताव दिया गया है।
कुछ को असम जेल भी किया जा सकता है शिफ्ट
सूत्रों की मानें तो राष्ट्रीय जांच एजेंसी कुछ गैंगस्टर्स को असम की जेलों में भी शिफ्ट करने पर विचार कर रही है। असम में फिलहाल बीजेपी की सरकार है ऐसे में गैंगस्टर्स को वहाँ शिफ्ट करने में कोई दिक्कत नहीं आने वाली है। पंजाब के खालिस्तानी समर्थक और वारिस पंजाब दे के मुखिया अमृतपाल सिंह और उसके सहयोगियों को डिब्रूगढ़ जेल में रखा गया है।

बिश्नोई के इंटरव्यू के बाद मचा था हड़कंप
जेलों में बंद गैंगस्टर्स के सिडिकेट का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मार्च महीने में लॉरेंस बिश्नोई के एक इंटरव्यू सामने आया। यह इंटरव्यू पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला की बरसी से ठीक एक दिन पहले आया। जिस समय इंटरव्यू को जारी किया गया उस समय बिश्नोई बडिंडा जेल में बंद था। मामला तुल पकड़ते देख पंजाब सरकार ने पछा झाड़ लिया और कहा कि बिश्नोई ने इंटरव्यू को बडिंडा जेल से नहीं दिया था। सूत्रों के मुताबिक, अप्रैल में जब एनआईए ने बिश्नोई को अपनी हिरासत में ली तो उसने पूछताछ में बताया कि इंटरव्यू उसने जेल से ही दी थी। पिछले साल अगस्त महीने में राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने उत्तर भारत राज्यों में सक्रिय कई गैंगस्टर्स के खिलाफ दो एफआईआर दर्ज की थी। एफआईआर में विदेश में बैठकर भारत में सिडिकेट चलाने, आतंकवादी हमलों और अपराधों के लिए धन जुटाने, युवाओं को भर्ती करने की साजिश का आरोप लगाया था। इसके साथ-साथ इसमें टारगेट किलिंग का भी जिक्र था।

महाराष्ट्र की राजनीति में हुआ बड़ा उलटफेर

शिंदे सरकार में शामिल हुए अजित पवार

ली डिटी सीएम पद की शपथ मुंबई, 02 जुलाई 2023 (ए।)। महाराष्ट्र की राजनीति में रविवार को एक और बड़ा भूचल आया और तेजी से बदलते घटनाक्रम में विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष अजित पवार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) तोड़कर अपने समर्थकों के साथ शिव सेना-भारतीय जनता पार्टी गठबंधन सरकार में शामिल हो गए। उन्होंने दोपहर बाद उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इससे पहले पवार ने आज सुबह तीन दर्जन से अधिक अपने समर्थक राकांपा विधायकों को बैठक बुलाई जिसमें राजनीतिक भविष्य की रूपरेखा पर चर्चा की गई। बैठक के तुरंत बाद, पवार मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को सम्मन पत्र सौंपने के लिए राज्यपाल रमेश बैस से मिलने

के लिए राजभवन पहुंचे और कुछ ही देर बाद उन्होंने मौजूदा विधानसभा के कार्यकाल में तीसरी बार उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। अजित पवार के शपथ लेने के साथ ही महाराष्ट्र में अब दो डिटी सीएम हो गए हैं।

शरद पवार ने बेफिक्र होकर मोदी को धन्यवाद दिया, एनसीपी में विभाजन के लिए ईडी को दोषी ठहराया
अपने भतीजे अजित पवार द्वारा

रविवार को पार्टी में विभाजन करार जाने के बाद शांत नजर आए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा, आज, उनकी पार्टी ने हाथ मिलाया है और उसी (एनसीपी) पार्टी के कुछ लोगों को (मंत्री के रूप में) शपथ दिलाई है, जिनके खिलाफ मोदी ने उंगली उठाई थी। इसका मतलब है कि मोदी के आरोप बेबुनियाद थे और अब हम सभी आरोपों से मुक्त हैं। मैं इसके लिए उनका आभारी हूँ... मैं पूछताछ का सामना कर रहे उन लोगों के लिए खुश हूँ जिन्होंने आज शपथ ली है। एनसीपी सुप्रीमो ने कहा कि उनकी पार्टी के कुछ नेता ईडी जैसे विभिन्न जांच एजेंसियों की जांच को लेकर असहज थे और पीएम के आरोपों के बाद वे बहुत असहज हो

गए, जिसके चलते उन्होंने रविवार को यह कदम उठाया। पवार ने कहा, हालांकि जो लोग गए हैं, उनमें से कई मेरे संपर्क में हैं। कुछ ने यह भी कहा है कि उनके हस्ताक्षर कैसे लिए गए। उन्होंने यह भी कहा है कि वे अगले दो-तीन दिनों में अपना रुख स्पष्ट कर दें। पवार ने यह भी कहा कि उनके पास देशभर से फोन कॉलस की बाढ़ आई है और कॉल करने वालों में कांग्रेस अध्यक्ष महिंकाराजी खड्गे और तुणमूल कांग्रेस अध्यक्ष और पश्चिम बंगाल की सीएम मामा बनर्जी भी शामिल हैं, जो अपनी चिताएं व्यक्त कर रहे हैं। एक सवाल के जवाब में एनसीपी सुप्रीमो ने कहा कि रविवार की उथल-पुथल पवार कबीले में फूट का संकेत नहीं है और यह परिवार के दायरे से बाहर की राजनीति है।



अजित पवार ने ली महाराष्ट्र डिटी सीएम पद की शपथ

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के अंडरब्रिज को उड़ाया

आरोपियों पर रासुका के तहत कार्रवाई

मंदसौर, 02 जुलाई 2023 (ए।)। बड़ी खबर मध्य प्रदेश से है। यहाँ महत्वाकांक्षी परियोजना दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे के अंडरब्रिज को डिटोनेटर से ब्लास्ट कर उड़ाने का मामला सामने आया है। अंडरब्रिज मंदसौर जिले श्यामगढ़ इलाके में बनाया गया था। पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर रासुका के तहत कार्रवाई की है। पुलिस ने बताया कि मामला मंदसौर जिले के शामगढ़ के ग्राम बनी का है। यहाँ से गुजर रहे भारतमाला परियोजना के तहत निर्मित महत्वाकांक्षी दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे को विस्फोटक से

क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। मामले में दो आरोपियों सुल्तान सिंह व रमेशचन्द्र ओड पर रासुका की कार्रवाई की गई है। पुलिस ने बताया कि जीआर इन्फ्राप्रोजेक्ट लिमिटेड के सीनियर हाईवे इंजीनियर नेमीचन्द्र सिधाडिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि गांव बनी के

निवारण अधिनियम 1984 का प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया। विवेचना में पाया कि सुल्तान सिंह के साथी आरोपी रमेशचन्द्र ओड जिसके पास उच्च विस्फोटक पदार्थ जिलेटिन को विस्फोट करने की मशीन (एयर क्रम्पेशर) है और किसी प्रकार का कोई लायसेंस व वैध दस्तावेज नहीं है। दोनों आरोपियों ने देश की महत्वाकांक्षी परियोजना दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे (8-लेन) को विस्फोट कर क्षतिग्रस्त किया और राश की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाया है। यदि समय पर जानकारी नहीं मिलती और एक्सप्रेस वे आवागमन के लिए प्रारम्भ हो जाता तो अत्यधिक जान व माल का नुकसान होता। गंभीर अपराध पर दोनों को ही पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध एनएसए की कार्रवाई की है।



दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे को ब्लास्ट से उड़ाया, 2 लोगों पर लगी रासुका

पीएफआई मामले में पटना से

दरभंगा तक एनआईए की छापेमारी

एक संदिग्ध हिरासत में पटना, 02 जुलाई 2023 (ए।)। बिहार में पटना के फुलवारीशरीफ और दरभंगा में एनआईए द्वारा छापेमारी की सूचना सामने आ रही है। जानकारी के अनुसार पीएफआई के ठिकानों पर छापेमारी की गई है। इस छापेमारी में आतंकवाद निरोधी दस्ता भी शामिल है। दरभंगा में बहेरा थाना क्षेत्र में कार्रवाई की गई है। जानकारी के अनुसार, पीएफआई के फुलवारीशरीफ मामले में ये कार्रवाई की गयी है। रविवार सुबह अचानक एनआईए और बिहार एटीएस की टीम ने मिलकर छापेमारी शुरू की। बताया जा रहा है कि

दरभंगा में बहेरा थाना क्षेत्र में कार्रवाई की जा रही है जबकि पटना में फुलवारीशरीफ में रेड मारी गई।

बिहार में बड़ी रेड!
एनआईए की टीम रात 2-00 बजे ही पहुंच गई थी। रियाजुद्दीन अंसारी के घर पर भी छानबीन की गई है। पटना के फुलवारीशरीफ इलाके में ही पीएफआई के ट्रेनिंग सेंटर का खुलासा हुआ था जिसमें संदिग्धों की गिरफ्तारी भी हुई थी।



बिहार में बड़ी रेड!

पीएम मोदी सात जुलाई को 28 परियोजनाओं की देंगे सौगात

वाराणसी, 02 जुलाई 2023 (ए।)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सात जुलाई से अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में 28 परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। वह एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे।
आज PM Modi वाराणसी की देंगे करोड़ों की सौगात
संस्कारी प्रवक्ता के मुताबिक, प्रधानमंत्री करीब 18 परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे। इनमें सुल्तानगंज-वाराणसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित सेक्रेट इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोटोकॉलिकल्स इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी का कोशल और तकनीकी सहायता केंद्र (सीएफटीसी) शामिल है। 305 करोड़ रुपये से अधिक लागत की 10 परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया जाएगा। इनमें मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट का सौंदर्यीकरण शामिल है। तीन रेलवे ओवरब्रिज का भी शिलान्यास किया जाएगा। इसके अलावा, प्रधानमंत्री बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में 10 मजला अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास जनता को समर्पित करेंगे। गंगा पर जल परिवहन को गति देने के लिए अस्सी घाट, शिवाला घाट, केंदर घाट, पंचगंगा घाट और राज घाट पर काम शुरू करने की नींव रखने का भी प्रस्ताव है।

दंगा मामले में कांग्रेस विधायक जीतू

पटवारी, 3 अन्य को एक साल की जेल

भोपाल, 02 जुलाई 2023 (ए।)। भोपाल की एक एम्पी-एमएलए अदालत ने मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक जीतू पटवारी को दंगा करने और सरकारी अधिकारियों के काम में बाधा डालने के करीब डेढ़ दशक पुराने मामले में एक साल कैद की सजा सुनाई। इसी मामले में पटवारी के अलावा पूर्व कांग्रेस विधायक कृष्णमोहन मालवीय समेत तीन अन्य को भी एक साल कैद की सजा सुनाई गई थी। पटवारी सहित प्रत्येक पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया। अदालत ने मामले में 13 अन्य आरोपियों को भी नॉटिस जारी किया, जो शनिवार को सुनवाई के दौरान उपस्थित नहीं थे। 2009 में मध्य प्रदेश कांग्रेस ने

राजगढ़ जिले में बिजली बिल में बढ़ोतरी सहित किसानों के मुद्दे पर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया था। प्रदर्शन के दौरान पुलिस और



प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प हो गई।

आईपीसी की धारा 148, 294, 353, 332, 336, 506 (2), 427 और सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम 1984 के तहत न्यायालय में चुनौती दूंगा। मध्य प्रदेश कांग्रेस प्रमुख कमल नाथ ने एक बयान में कहा, हम अदालत के फैसले का सम्मान करते हैं, लेकिन इससे असहमत हैं। हम इस फैसले को ज़रूरी अदालत में चुनौती देंगे। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि समाज के अधिकारों के लिए अदालत करना एक नेता का फलदा कर्तव्य है। यह संविधान की मूल भावना के अनुरूप है। यह हम कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से सीखा है। पीपीसी की जितू पटवारी के साथ है।

ठाा सुकेश चंद्रशेखर का बड़ा दावा

केजरीवाल के पास दुबई में तीन प्लैट

नई दिल्ली, 02 जुलाई 2023 (ए।)। कथित मनी लॉन्ड्रिंग और कई लोगों से जबर्न वसूली के आरोपी ठाा सुकेश चंद्रशेखर ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पत्र लिखकर उन पर दुबई में तीन प्लैट होने का आरोप लगाया है। सुकेश चंद्रशेखर ने अपने पत्र में यह दावा किया है कि केजरीवाल ने ये प्लैट कमीशन के पैसे से खरीदे हैं। सुकेश ने पत्र में लिखा है कि केजरीवाल जी, मुझे पता चला है कि आपने दुबई में अपने सहयोगी मनोज जैन से जुमेराह पास में उन

तीन अपार्टमेंटों को तत्काल बेचने के लिए कहा है, जो 2020 में हैदराबाद में एक फार्मा टेकेंदर से प्राप्त कमीशन का उपयोग कर मेरे माध्यम से 65 मिलियन दिरहम की राशि में खरीदे गए थे।
उन्होंने आगे लिखा, चूंकि आप सच नहीं बोलेंगे, मेरे और सत्येंद्र जैन के बीच की तीन पेज की व्हाट्सएप चैट में जारी कर दूंगा, जिसमें दुबई में इन तीन अपार्टमेंटों की खरीद का लेनदेन दिखाया गया है। उन्होंने लिखा, मैं अगले सात दिनों के भीतर ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) और भ्रष्टाचार निरोधक सतकर्ता को भी एक प्रति भेजूंगा।

तीस्ता सीतलवाड़ की जमानत याचिका

रद्द होने पर सुप्रीम कोर्ट ने उठाए सवाल

अहमदाबाद, 02 जुलाई 2023 (ए।)। गुजरात हाईकोर्ट ने शनिवार को एक्टिविस्ट तीस्ता सीतलवाड़ की जमानत याचिका खारिज कर दी और उन्हें तुरंत आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया। सीतलवाड़ अब मुंबई में रहती हैं, उन पर 2002 के गुजरात दंगों के सिलसिले में सबूत गढ़ने का आरोप है। वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात हाईकोर्ट के फैसले पर सवाल उठाते हुए पूछा कि क्या आप वे भरोसा देने की तैयार हैं कि आप तुरंत हिरासत में नहीं लेंगे? सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि



तीस्ता सीतलवाड़ पिछले 8-9 महीने से जमानत पर हैं। अगर वो तुरंत सरेंडर नहीं करेंगी तो आसमान नहीं टूट पड़ेगा। गुजरात सरकार की दलील पर सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाते हुए कहा कि हाईकोर्ट को कम से कम सांस लेने का वक्त देना चाहिए था। हालांकि सुप्रीम कोर्ट के 3 जजों की इस मुद्दे पर

राय अलग-अलग रही इस कारण इस मामले को सीजेआई के पास भेज दिया गया है। अदालत का यह फैसला सितंबर 2022 में सीतलवाड़ को सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतर्निहित जमानत दिए जाने के बाद आया है, जिसने उन्हें अब तक गिरफ्तारी से बचाए रखा था। न्यायमूर्ति निरंजण देसाई के फैसले पर वरिष्ठ वकील मिहिर ठाकौर ने अदालत से इसके क्रियाव्ययन पर 30 दिनों के लिए रोक लगाने का अनुरोध किया। हालांकि जस्टिस देसाई ने इसे भी खारिज कर दिया।

स्वर्ण मंदिर के लंगर की सूखी

रोटियों का घपला, 2 सेवादार मुअत्तल

अमृतसर, 02 जुलाई 2023 (ए।)। श्री दरबार साहिब के लंगर में सूखी रोटियों, जूट व चोकर, चावल के सामान में हुआ अदालत का यह फैसला सितंबर 2022 में सीतलवाड़ को सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतर्निहित जमानत दिए जाने के बाद आया है, जिसने उन्हें अब तक गिरफ्तारी से बचाए रखा था। न्यायमूर्ति निरंजण देसाई के फैसले पर वरिष्ठ वकील मिहिर ठाकौर ने अदालत से इसके क्रियाव्ययन पर 30 दिनों के लिए रोक लगाने का अनुरोध किया। हालांकि जस्टिस देसाई ने इसे भी खारिज कर दिया।



प. बंध की अनियमितताओं के सचवाईं पारदर्शी ढंग से संगत के सामने रखी जाएगी। इसकी जांच चल रही है जो भी अनियमितताएं चल रही हैं उसके खिलाफ बनती कार्रवाई की जाएगी। किसी भी किसम की पैसे जमा करवाने के लिए कहा है। लापरवाही सहन नहीं की जाएगी।

संपादकीय

हरियाणा में भाजपा का तालमेल टूटेगा

भारतीय जनता पार्टी देश भर में नए सहयोगी तलाश रही है। साथ छोड़ कर चले गए पुराने सहयोगियों को वापस लाया जा रहा है। लेकिन हरियाणा में ऐसा लग रहा है कि भाजपा अपनी सहयोगी जननायक जनता पार्टी से पीछे छूड़ा रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हरियाणा दौर के बाद इस बात की चर्चा तेज हो गई है कि अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा अलग जजपा का तालमेल नहीं रहेगा। हालांकि यह तय नहीं है कि जजपा राज्य सरकार में रहेगी या नहीं लेकिन यह तय बताया जा रहा है कि भाजपा लोकसभा की सभी 10 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेगी। अगर भाजपा अकेले चुनाव लड़ने का फैसला करती है तो मजबूरी में जजपा को सरकार से अलग होना पड़ सकता है। उसके बाद भी निर्दलीय विधायकों के दम पर सरकार चलती रह सकती है। उस समय कोई भी सरकार गिराने की नहीं सोचेंगी क्योंकि लोकसभा चुनाव के तीन चार महीने बाद ही विधानसभा के चुनाव होते हैं। पहले कहा जा रहा था कि विधानसभा का चुनाव इस बार लोकसभा के साथ ही हो सकता है लेकिन इसकी संभावना कम है। लोकसभा के साथ किसी ऐसे राज्य का चुनाव नहीं होगा, जहाँ भाजपा सरकार में है या मजबूत स्थिति में है। असल में लोकसभा की कई सीटों को लेकर समीकरण नहीं बंद रहा है। मिसाल के तौर पर हिसार सीट देख सकते हैं, जिस पर जजपा के नेता और राष्ट्र के उप मुख्यमंत्री दुषंत चौटाला की नजर है। वे पहले वहां से लड़ते रहे हैं। इसी तरह चौटाला परिवार की पारंपरिक सिस्था सीट पर भी उनकी नजर है। दूसरी ओर हिसार सीट पर पूर्व आईएएस बृजेंद्र सिंह भाजपा सांसद हैं, जो बरिंदर सिंह के बेटे हैं। कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में शामिल हुए कुलदीप बिरोनई भी इसी सीट के दावेदार हैं। सो, भाजपा पहले से ही अपने दो नेताओं की खोजता न फंसी है। भाजपा के एक जानकार नेता का कहना है कि बात एक या दो सीटों की नहीं है, बल्कि पार्टी इस भरसे में है कि नरेंद्र मोदी के नाम पर वह इस बार भी दसों सीट जीत सकती है। इसलिए वह किसी के लिए सीट नहीं छोड़ना चाहती।

मणिपुर का संकट गहरा रहा है

मणिपुर में जातीय हिंसा शुरू हुए 56 दिन हो गए हैं। इतने दिन के बाद राज्य की सरकार और सुरक्षा बलों की ओर से दावा किया जा सकता है कि मोटे तौर पर शांति बहाल हो गई है और हिंसा की घटनाएं कम हो गईं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसी हिंसा, जिसमें किसी की जान जा रही हो, उसमें कमी आई है। लेकिन सरकारी इमारतों व लोगों के घरों पर हमले, तोड़-फोड़, आगजनी आदि की घटनाएं कम नहीं हुईं, बल्कि इनमें बढ़ोतरी हो गई है। केंद्र और राज्य सरकार ने मणिपुर के हालात संभालने में जितनी देरी की उससे हिंसा ने एक नया रूप ले लिया है। इसकी जड़ें गहरी हो गईं और दशकों पुराने घाव हरे हो गए हैं। कुकी और मैती समुदाय के बीच दशकों के प्रयास से जो भरोसा बना था वह समाप्त हो गया है। पिछले 56 दिन में जो घटनाएं हुई हैं उनसे दोनों के बीच ऐसी दूरी बनी है, जिसे फिर से भर पाना निकट भविष्य में मुश्किल दिख रहा है। मणिपुर संकट में कुछ नए आयाम भी जुड़ गए हैं, जिनकी ओर सुरक्षा बलों ने ध्यान दिया। शांति बनाए रखने और उग्रवादियों पर काबू पाने के लिए तैनात सेना व अर्धसैनिक बलों को उग्रवादियों के साथ साथ जन प्रतिरोध का सामना भी करना पड़ रहा है। इसका वीडियो सुरक्षा बलों ने जारी किया है। ये वीडियो हाल की दो घटनाओं के हैं। एक घटना पूर्वी इफाल की है, जहाँ इथम गांव में खुफिया सूचना के आधार पर सुरक्षा बलों ने कार्रवाई करके

प्रतिबंधित संगठन कांगलेई यावोल कत्रा लुप यानी केवाईकेएल के 12 केडरों को पकड़ा था। इनके पकड़े जाने की सूचना के बाद करीब डेढ़ हजार लोग इकट्ठा हो गए, जिनमें ज्यादातर महिलाएं थीं। उन्होंने पकड़े गए उग्रवादियों के आसपास घेरा बना लिया और मजबूरी में सुरक्षा बलों को उन्हें छोड़ना पड़ा। दूसरी घटना भी इथम गांव की ही है, जहाँ बड़ी संख्या में महिलाओं ने घेरा बनाया हुआ था और भारी मशीन से सड़क की खुदाई हो रही थी ताकि असम राफल्स और दूसरे सुरक्षा बलों को उस इलाके में घुसने से रोकना जा सके। सोचें, जो हिंसा मुझीर उग्रवादी दलों के द्वारा शुरू की गई थी वह स्पष्ट रूप से दोनों समुदायों के बीच की व्यापक जातीय हिंसा में बदल रहा है, जिसमें आम लोग अपनी अपनी जाति के उग्रवादियों का समर्थन कर रहे हैं और उनकी रक्षा कर रहे हैं। मणिपुर के लिए यह नया घटनाक्रम है। ध्यान रहे पिछले कुछ बरसों से उग्रवादियों को आम लोगों का समर्थन मिलना बंद हो गया था। उनका आधार सिमत दल बहुत छोटा हो गया था और ज्यादातर उग्रवादी संगठनों को मणिपुर के अंदर अपना बेस बनाने की जगह नहीं मिली थी। उनको मजबूरी में म्यांमार और

बांग्लादेश की सीमा में अपना बेस बनाना पड़ा था। कई बार भारतीय सुरक्षा बलों ने म्यांमार की सीमा में घुस कर भी उग्रवादियों के शिविर और आम लोगों की उदासीनता की वजह से ज्यादातर उग्रवादी संगठनों के काइड सरेंडर करने लगे थे और मुख्यधारा में लौटने लगे थे। लेकिन तीन मई को शुरू हुई हिंसा ने उनको जीवनदान दे दिया है। उनके पास बड़ी संख्या में नए हथियार पहुंच गए हैं और आम

बाताया जा रहा है कि चीन में बनी मोटरवाइक्स की कीमत 25 हजार रुपए के आसपास है, जो आसानी से उग्रवादियों को उपलब्ध हो जा रही है। वे इनके जरिए गांवों में पहुंच जा रहे हैं और हिंसा, आगजनी को अंजाम दे रहे हैं। इन पर उनको रजिस्ट्रेशन नंबर लेने की जरूरत नहीं है और पकड़े जाने पर उनका कोई नुकसान नहीं हो रहा है। यह उग्रवादियों को मिल रही बाहरी मदद का एक संकेत है। इस तरह की ओर और कितनी मदद

समिति बनाई गई थी। वह प्रयास इतना आधा अधूरा और बेमन से किया गया था अज्ञ करीब एक महीने बाद किसी को अंदाजा नहीं है कि वह शांति समिति कहां है। हिंसा शुरू होने के 27 दिन के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह मणिपुर के दौर पर पहुंचे थे। उसके बाद यह शांति समिति बनी थी। लेकिन इसके बनते ही कुकी और मैती दोनों समुदायों ने इसकी बैठकों में शामिल होने से इनकार कर दिया। कई तटस्थ और निरपेक्ष लोगों ने भी अपने को इससे अलग कर लिया। सो, इसका काम शुरू ही नहीं हो पाया, जबकि राज्यपाल की अध्यक्षता में इसका गठन हुआ था। सरकार सुरक्षा बलों के सहारे बैठी रही है कि वे हालात संभाल लेंगे या इस तरह के आधे अधूरे पहल करती रही और इस बीच हालात हाथ से निकल गए। अब समर्थनस न आओ और परिणामस्वरूप एपीएमटी हुआ है, जिसमें कुकी और मैती दोनों समुदायों के उग्रवादी भी शामिल हैं। लेकिन इसके बारे में भी माना जा रहा है कि यह समय हासिल करने, अपना समर्थन बढ़ाने और सुरक्षा बलों की कार्रवाई में देरी कराने और रणनीति है। क्योंकि इस प्रकार में शामिल कई संगठनों के बारे में सूचना है कि उनका काइड हिंसा में शामिल हैं। कुकी उग्रवादी



लोगों का समर्थन भी मिलने लगा है। सेना, अर्धसैनिक बलों और पुलिस के लिए इससे नई चुनौती पैदा हुई है, जिससे निपटने का रास्ता अभी नहीं दिख रहा है। भारत की सीमा के अंदर किसी भी किस्म की अस्थिरता या जातीय तनाव का फायदा उठाने के लिए तैयार बैठे चीन को इससे अलग मोका मिल गया है। इसी खबरें भी आ रही हैं कि चीन उग्रवादी तत्वों को मदद दे रहा है। चीन में बनी मोटरवाइक्स के इस्तेमाल के पुख्ता सबूत सुरक्षा बलों को मिला है।

अभी के स्कूलों, कॉलेज और कोचिंग की कहानी

इस कहानी में एक लड़की हैं जिसका नाम मुस्कान है। वो बहुत शांत और माँ-बाप की सब भी बातों को मानती थी। मुस्कान जब कक्षा 12वीं में थी। तब वह अपने पढ़ाई के लिए कोचिंग करने गईं। धीरे-धीरे मुस्कान की दोस्ती सबसे होने लगी। चाहे वो लड़का हो या कोई लड़की। वो सबसे बड़े अच्छे तरीके से बात करती, इसलिए सब मुस्कान से भी बात करते। शिक्षक दिवस के दिन सभी लड़कें लड़कियाँ सही तैयार होकर आए, सबकी दोस्तों ने मिलकर खूब मस्ती। तभी एक मुस्कान का दोस्त नीर आया और बोलने लगा यार तुम अपने फोन नंबर दो ना। मुस्कान पछी क्यों दूँ वैसे भी मेरे पास अपना कोई फोन नहीं है। फिर नीर बोलने लगा अच्छ, ये ही दोस्ती। तुमको मुझे थोड़ा भी विश्वास नही है क्या? मैं वे मालब तुम्हें परेशान करूँगा, तुम्हें ये मत दो अपना नंबर। मुझे नहीं चाहिए। अब मुस्कान को भी अजब लगने लगा। कि न जाने ये क्या हो गया। सभी अपने अपने घर चले गए। दूसरे दिन सर क्लास बंद कर दिए मगर मुझे पता नहीं था मगर मुस्कान

तो कोचिंग चली गईं। और अचानक नीर मुस्कान को देख लिया और बोलने लगा। कहा था न कि नंबर दे दो। अगर नंबर दे दो तो बता देता ना। आज मैं तुम्हें एक वचन देता हूँ जिंदगी के जिस पल तुम मुझे याद करूँगी उस पल तुम्हारे साथ हूँगा। यह बात सुनकर मुस्कान जोड़-जोड़कर मूक हो गई। मुस्कान से भी कह लिए। फिर मुस्कान सर को बताई कि सर मैं कल क्लास आई थी मगर कल तो क्लास बंद था। तब सर बोले आपको पता नहीं था क्या। रुको! अभी एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाते जिसमें सभी बच्चों को जोड़ दिए। अब क्लास के हर बच्चे को मेरे नंबर मिल गया। अब क्या नीर को नंबर मिल गया। वो उससे कॉल और मैसेज करता और मुस्कान भी उससे बात करने लगी। नीर को मुस्कान से सच्चा वाला प्यार ही गया। मगर यह सब मुस्कान को पसंद नहीं था। एक दिन नीर फोन किया तो मुस्कान के भाई उठाकर बोले कि मेरी बहन से दूर रहो, नहीं तो। यह सब सुनकर वह सोचा कि

अब मुस्कान को परेशान करेगा वो पेशमय कॉल करता और हर समय बोलता मुस्कान को कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा। अब हमेशा का कहानी उसका बन गया। एक दिन मुस्कान बाजार गई वो भी मुँह बाँधकर तो फोन किया और बोला 20 मिनट रुको। मुझे कुछ काम है। आया 1 घंटे बाद फिर बोलता है कि अपना मुँह खोलो। मुझे अपने प्यार को देखना है। बस नीर के इस बदतमीज के कारण मुस्कान हर नंबर ब्लॉक कर देती है। मगर लाख कोशिश करने के बाद भी वो आज तक नहीं देख पाया। वो आज भी रोता है कि मेरी बदतमीज के कारण आज वो इस दुनिया की सबसे अच्छी दोस्त को खो दिया।



मुस्कान केशरी
मुजफ्फरपुर बिहार

अंधकार हटाकर प्रकाश की ओर ले जाते हैं गुरु

गुरु पूर्णिमा का संबंध महाभारत के रचयिता महर्षि श्रीकृष्ण द्वैपायन से जुड़ा है, जिनका जन्म इसी दिन हुआ माना जाता है। गुरु पूर्णिमा का पर्व वैसे तो शास्त्रों में गुरुओं को समर्पित है लेकिन सही मायनों में यह आदिगुरु वेद व्यास के सम्मान में ही मनाया जाता है और इसीलिए इसे 'व्यास पूर्णिमा' भी कहा जाता है। संस्कृत प्रकाण्ड विद्वान महर्षि द्वैपायन ने ही सनातन धर्म के चारों वेदों की रचना की थी, इसीलिए उन्हें महर्षि वेद व्यास के नाम से जाना गया। महर्षि वेद व्यास ने एक लाख श्लोक वाला महाभारत, पुराण और ब्रह्मा-सूत्र की रचना के साथ एक वेद को चार वेदों में विस्तारित कर समस्त संसार को ज्ञान से प्रकाशित किया था, इसीलिए उन्हें आदि-गुरु का दर्जा प्राप्त है। प्रतिबंधित गुरु पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है, जो इस वर्ष 3 जुलाई को मनाई जा रही है। हिन्दू धर्म में गुरु को ईश्वर से भी बड़कर माना गया है और गुरु की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा भी गया है कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शंकर हैं, गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं, ऐसे सदगुरु को प्रणाम। 'गुरु' वास्तविक का अर्थ है अंधकार रूपा अज्ञान को मिटाने वाला। गुरु को गुरु इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वह

अज्ञान रूपा अंधकार को हटकर अजीब को ज्ञान रूपा प्रकाश से आलोकित करता है। ज्ञान की रोशनी सभी प्रकार के अंधकार को मिटा देती है, इसीलिए जीवन में गुरु का स्थान सबसे ऊँचा है। गुरु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति होता है, जो अंधकार को मिटाकर प्रकाश के उजाले से हमारे अंतरात्मा और मन को प्रकाशित कर सकता है। एक अच्छे गुरु जीवन में रोशनी लाने का कार्य करता है, जिससे जीवन प्रकाशमान हो जाता है। गुरु साधक के अज्ञान को मिटाता है, ताकि वह अपने भीतर सृष्टि के स्रोत का अनुभव कर सके। शास्त्रों में अज्ञान रूपा अंधकार को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वही गुरु है अर्थात् अंधकार को हटकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को ही 'गुरु' कहा जाता है। कबीरदास कहते हैं कि अच्छे गुरु आ जग गुरु मिल गए, अन्यथा तो मेरी हानि ही होती। जैसे दीपक की आगि की ओर

पतंग आकृष्ट हो जाते हैं, वैसे ही मैं भी विषय वासनाओं और माया की ओर आकृष्ट हो जाता और परिणामस्वरूप अमूल्य जीवन को नष्ट कर देता। मनुस्मृति के अनुसार ऐसे व्यक्तियों को गुरु बनाना चाहिए, जो ध्या, दया, तपस्या, निर्वृत्ता, यम, नियम, दान, सत्य, विद्या, संतोष इत्यादि सब गुणों से सम्पन्न हों। गुरु की कृपा से ही विद्यार्थियों को विद्या की प्राप्ति होती है और उनके अंदर का अज्ञान तथा अंधकार दूर होता है। गुरु कृपा से ही विश्व के समस्त प्राणों, ईश्वर और स्वर्ग की सम्पदा प्राप्त हो सकती है, जो बड़े-बड़े योगियों को भी नसीब नहीं होती। गुरु तथा देवता में समानता के बारे में कहा गया है कि देवताओं के लिए जैसी भक्ति की आवश्यकता है, वैसी ही गुरु के लिए भी है। अच्छे गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है लेकिन गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं। वैसे तो गुरु को सभी धर्मों में विशेष महत्व दिया जाता



रहा है लेकिन एक अच्छे गुरु का स्थान हिन्दू धर्म में भगवान से भी बढ़कर है। शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त करना कठिन है और अगर सिष्य को अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास हो तो उसका बुरा स्वयं गुरु भी नहीं कर सकते। गुरु पूर्णिमा को बौद्ध धर्म के अनुयायी गौतम बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश के सम्मान में मनाते हैं। सिष्य धर्म में केवल एक ईश्वर और अपने सभी दसों गुरुओं की वाणी को ही जीवन के वास्तविक सत्य के रूप में मानते हैं। जैन धर्म के अनुसार इस दिन को चौमासा अर्थात् चार महीने के बारिश के मौसम का शुरुआत के रूप में तथा त्रीनोक गृह पूर्णिमा के रूप में माना जाता है। गुरु पूर्णिमा का पर्व वास्तव में मानव जीवन में गुरु के विशिष्ट स्थान को दर्शाता है। एक वड्डे में गुरु की महिमा के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा गया है—
गुरु को पारस जानिए, करे लौह को स्वर्ग।
शिष्य और गुरु जगत में, केवल दो ही वर्ण।

योगेश कुमार गोयल नजफगढ़, नई दिल्ली

पैरेंट्स दर्पण हैं, जिसमें बच्चे जिंदगी का प्रतिबिंब देखते हैं

स्कूलाल्प वालेड नामक चिंतक ने कहा है कि आप का व्यक्तित्व इतनी तेज आवाज में बोलता है कि आप के कहे शब्द सुने नहीं जा सकते। पैरेंट्स जब बच्चे से अच्छे व्यवहार और अच्छे काम की अपेक्षा करता है तब यह बात नपराअंदाज नहीं होनी चाहिए। आचार ही प्रचार का श्रेष्ठ साधन है। आचार का असर धर्मग्रंथों के उपदेशों की अपेक्षा भी बढ़ जाता है। एक अफसर अपने बच्चों को गोल्फ के मैदान में गोल्फ खेलने के लिए ले गया। उसने टिकट काउंटर पर बैठे व्यक्ति से पूछा, अंदर जाने की टिकट कितने की है? वह बैठे व्यक्ति ने जवाब दिया, 6 साल से ज्यादा उम्र वालों के लिए 3 डॉलर और उससे कम उम्र वालों के लिए कोई टिकट नहीं है। अफसर ने कहा, छोटे की उम्र 3 साल है और बड़े की उम्र 7 साल है। इसलिए मुझे तुम्हें 6 डॉलर देने होंगे। टिकट काउंटर पर बैठे युवक ने कहा, आप की लाटरी लगी है क्या? आप 3 डॉलर बचा सकते थे। आप मुझसे कह सकते थे कि बड़ा बेटा 6 साल का है। मुझे पता तो था नहीं। अफसर ने जवाब दिया, मुझे पता है कि तुम्हें नहीं पता। पर बच्चों को तो पता चल जाता कि उनका पिता झूठ बोल रहा है। मेरे बच्चे मुझे झूठ बोलते सुनते तो वे भी झूठ बोलने में नहीं हिचकते। आज के चुनौती

रहे थे। बगल में बैठे किसी व्यक्ति ने पूछा, आज जब हर बच्चा मोबाइल का दीवाना है तो आप का बच्चा पुस्तक पढ़ रहा है, हैरानी की बात है? मम्मी ने हंस कर कहा, बच्चा हम जो कहते हैं वह नहीं, जो देखता है उसका अनुसरण करता है। बच्चे को अच्छे आदर्मी बनाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें।
बच्चे की उपस्थिति में झूठ न बोलें

हम छोटीछोटी बातों में झूठ बोलते रहते हैं, इसलिए बच्चा मान लेता है कि झूठ बोलना खराब चीज नहीं है। अगर आप को किसी वजह से झूठ बोलना ही पड़े तो बच्चे के सामने दिलगिरी व्यक्त करें कि मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, ऐसा बोल कर मैंने गलत किया है। रियली, आई एम सारी। बच्चे को यह भी समझाएं कि हमारे आसपास

उठ कर मोबाइल में डूब जाना छोड़ना होगा। अगर सुबह समय है तो बच्चे के साथ घूमने जाएँ, प्रार्थना करें और अपनी पीठों तो कार्ड्स वगैरह गेम खेलें। क्रिकेट या बैडमिंटन खेलने जाएँ। म्यूजिक सुनें या पुस्तक पढ़ें। अगर सोशल मीडिया में डूबे नहीं रहेंगे तो बच्चे पर आप की बात का असर होगा। पापा-मम्मी ऐसा करते हैं या नहीं

का, पागल, बेवकूफ, नालायक या हयामी जैसे शब्द पैरेंट्स को किसी के भी लिए बोलने से मुन बचना खुद भी बिना समझे ये शब्द बोलने लगता है। सार्वजनिक रूप से बच्चा ये शब्द बोलता है तो पैरेंट्स चिन्तित है कि मैंने तुम्हें यही संस्कार दिए हैं? बच्चा संस्कार उपदेश से नहीं, आचरण से ग्रहण करता है। जब तक बच्चे में दुनियादारी की समझ न आए, तब तक वह अपने पैरेंट्स के ही व्यवहार को सही मानता है और जब बच्चे में समझ आ जाती है, तब तक बच्चे के व्यक्तित्व में अनेक गलत बातें समा जाती हैं।
पालितिवस

संयुक्त परिवार हो या विभक्त, ज्यादातर अभिभावक किसी न किसी मुद्दे पर पालितिवस खेलते रहते हैं। बच्चे की शांति नजर में यह सब आता है। पर ठीक से विवेकबुद्ध विकसित न होने से या निर्दोषता होने के कारण ये आप के मन को समझ नहीं सकते और मन में लोगों के लिए गलत अभिप्राय बना लेते हैं और फिर वैसा ही व्यवहार करते हैं। इसलिए अपनी डर्टी पालितिवस की छाया बच्चों पर न पड़े। वरना भविष्य में वही पालितिवस वे आप के साथ करेंगे। अगर अच्छी संतान चाहते हैं तो अच्छे बनना ही बेस्ट विकल्प है।
खेदा सिंह
नाएड्डा उत्तरप्रदेश

अच्छे माता पिता कैसे बनें?

अनेक लोग झूठ बोलते रहते हैं, बट इट्स नाट फेर... मैं और मम्मी सच बोलते हैं, इसलिए मेरा बेटा भी सच बोलेगा।
मोबाइल से बचें
आज पैरेंट्स मोबाइल के लिए बच्चों पर गुस्सा करते हैं। आज की पीढ़ी का मोबाइल के बिना चलता ही नहीं है। क्या यह बात उचित है? अगर पैरेंट्स चाहते हैं कि बच्चा हमेशा मोबाइल में व्यस्त रहने के बजाय कुछ रचनात्मक करे तो इसके लिए पहले पैरेंट्स को सुबह



एनडीए को रिवाइव करने की कोशिश

भाजपा कितनी शिद्दत से लोकसभा चुनाव की तैयारी में लगी है और कैसे विधानसभा चुनाव पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रही है इसका एक संकेत इस बात से भी है कि वह पुराने एनडीए को रिवाइव करने की कोशिश कर रही है। पुरानी सहयोगी पार्टियों को किसी तरह से भाजपा के नेटवर्क वाले गठबंधन में लाने की कोशिश हो रही है। यह देखना दिलचस्प है कि ये सारे सहयोगी उन राज्यों में हैं, जहाँ इस साल चुनाव नहीं हो रहे हैं। इस साल जहाँ चुनाव हो रहे हैं वहाँ भाजपा अकेले ही लड़ने वाली है। किसी के साथ कोई तालमेल नहीं होगा है। इसके बावजूद वह गठबंधन को लेकर लगातार बैठकें कर रही है। संभावित सहयोगियों के साथ तालमेल की बारीकियाँ तय कर रही है। पिछले दिनों केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा टीडीपी नेता और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडु से मिले। अमित शाह तेलुगु सुपर सिटार विरंजीवी और उनके बेटे रामचरण से मिले तो जूनियर एनडीआर से भी उनकी मुलाकात हुईं। आंध्र प्रदेश में टीडीपी और पवन कल्याण की जन सेना के साथ तालमेल की बात हो रही है। कर्नाटक में भी भाजपा और जेडीएस के तार जुड़े हैं। जेडीएस के संस्थापक और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ ने भाजपा के साथ तालमेल का बहुत खुला संकेत दिया। भाजपा वहाँ उसी तर्ज पर तालमेल कर सकती है। जिस तर्ज पर उसने 2019 में बिहार में नतीश कुमार की पार्टी के साथ किया था। भाजपा को अपनी जीती हुईं सीट जेडीएस के लिए छोड़ सकती है। सोचें, विधानसभा चुनाव तेलंगाना में है लेकिन

भाजपा तालमेल आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में कर रही है और तमिलनाडु में तालमेल बचाए रखने के प्रयास कर रही है। इसी तरह भाजपा बिहार में नए सहयोगी जोड़ रही है। नतीश कुमार के साथ छोड़ने से होने वाले संभावित नुकसान की भरपूर के लिए जीवन रण माली की हिंदुस्तानी आवाज मोर्चा, उषा कुंजवाहा की राष्ट्रीय लोक जनता दल और मुकेश सहनी की विकासशाली ईसान पार्टी से भाजपा तालमेल करेगी। चिराग पासवान और पशुपति पारसी की पार्टियों के साथ उसका तालमेल है। पंजाब में फिर से अकाली दल के साथ तालमेल की बात चल रही है। बलाया जा रहा है कि तालमेल पर सैद्धांतिक सहमति बन गई है और अब सीट बंटवारे पर बात हो रही है। इन दोनों राज्यों में भी विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनाव के बहुत बाद में होने हैं। सो, इस साल जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, जहाँ तालमेल भाजपा की तैयारी हो रही होगी लेकिन इसके साथ साथ भाजपा लोकसभा चुनाव की तैयारियाँ कर रही है। राज्यों में भाजपा की रैलियाँ होंगी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के अजमेर और मध्य प्रदेश के भोपाल से इसकी शुरुआत भी कर दी है। लेकिन इसके साथ साथ पूरे देश में भी नेताओं के दौरे हो रहे हैं। अमित शाह ने महाराष्ट्र, हरियाणा, बिहार आदि ऐसे राज्यों में रैलियाँ की हैं, जहाँ लोकसभा चुनाव में भाजपा को कुछ नुकसान का अंदाजा दिख रहा है। उन्होंने तमिलनाडु में भी रैली की है, जहाँ कुछ हासिल होने की उम्मीद दिख रही है।
हरिशंकर व्यास



कालिक्य कुमार त्रिपाठी राम
गान्धीनगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटीक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

कलम भिगोकर
जिंदगी की कशमोकश में उलझ हम रह गये
ना चाहकर भी हम सब खामोश रह सह गये।
दरद ही दरद दिखे है, हमको तो इस जिंदगानी में
दरद लिखते-लिखते, हम तो आसू-आँसु में बह गये।
बढ़ गये सब मेरे अपने मेरे आगे हस्ते-हमको, हम तो वहीं रह गये।
अपनी उम्र खापाई मैंने अपनों के लिए हरकत
अपनों ने ही नकारा हमें, हम सोचते ही रह गये।
दरद-ए जिंदगी मेरे कोई जग मेरा साथ न निभाया
मेरी कलम से मोहब्वत पा, हम उसमे हो रह गये।
सोचते क्या ये दरद, ये तन्हाई मेरी कभी घट पाएगी
सोचते-सोचते कलम संग, हम यही सोचते रह गये।
जीवा के भीतर दबी दरद-ए चीख, कुछ बताती सबको
दरद-ए स्थायी मे भिगो कलम, लिख सब तन्हा रह गये।
वीना आडवाणी
नागपुर, महाराष्ट्र

इंसान हूँ मैं भी
हैं पहुंच जाते हो कहीं भी, कभी भी, अपनी जात और जाति की धमक लेकर, मूर्खों को ऐंठते हो, मरोड़ते हो, आँखें तरते हो,
पता नहीं कितना मिल पाता है तुम्हें आत्मिक सुख, मानसिक सुख, या शारीरिक सुख, कैसे चल लेते हो भारी भरकम अहम का बोझ लेकर, गली दुना, गली मारना, बलात कब्जा कर लेना, मैंने सुना ही नहीं कि कर लेते हैं ये कस्तूरी कोई सच्चा इंसान, आओ कभी मिलने एक अच्छे इंसान बनकर, क्योंकि मैं भी इंसान ही हूँ।
राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़ छत्तीसगढ़

गुरुदेव को सादर प्रणाम है
ज्ञान के चक्षुओं को खोलें दे अंतस के द्वार सारे खोल दे जग मे उँचा उसका नाम है गुरुदेव को सादर प्रणाम है जीवन मे प्रकाश जो भर दे उर को अलंकिता जो कर दे सबसे बड़ा उसका पुकार है गुरुदेव को सादर प्रणाम है जगत के सब संताप मिटा दे मानव के सभी पाप मिटा दे सदा से ऐसे गुरुवर महान है गुरुदेव को सादर प्रणाम है जीवन के सब परांय बदल दे समस्या का जो हल भी कर दे चरण में शिश युके बावहार है गुरुदेव को सादर प्रणाम है
प्रमेशदयी मानिकपुत्री
धमतरी छत्तीसगढ़

रुत बदली भोले
रुत बदली लो बरसी बदली, भोले से मिलकर वह हंस ली, बुँदें गिरी शीश पर जितनी, मां गंगा-सी पावन निकली।
रुत बदली
आज हमारे संग चली थी, महकी वो जो कली खिली थी, देख के भोले को आंगन में, मुस्कानकर वो तो मिली थी।
रुत बदली
झुकी लता जो पेड़ से ऐसी, भोले के चरणों में आई, मिला वह पद कमल हों जैसे, होले-से फिर वो मुस्काने।
रुत बदली
हिमकाण-सी बुँदें पतों पर, कनक-रजत-सी चमकी है, भोले की आट्ट पाकर वो, तनिक यहाँ पर बहकी है।
रुत बदली
इन्द्र धनुष बदली से झाँक, भोले से मनुहार किए, जन- मन सब ये हुआ लूँकर, भोले की झंकार लिए।
रुत बदली
कालिक्य कुमार त्रिपाठी राम
गान्धीनगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश

छत्तीसगढ़ सहप्रभारी चंदन यादव ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं का टटोला नब्ज

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सचिव और छत्तीसगढ़ सहप्रभारी चंदन यादव कांग्रेस कार्यकर्ताओं का नब्ज टटोला। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों की मन की बात सुनी, उनका उत्साहवर्धन किया और आगामी चुनाव के लिए कमरकस लेने की बात कही। कार्यकर्ताओं ने भी खुले मन से अपने मन की बात रख सता के शीर्ष पर बैठे नेताओं और प्रशासन की अनसुनी पर नाराजगी जताया। कांग्रेस के बूथ चलो अभियान से पहले प्रदेश प्रभारी सचिव कार्यकर्ताओं को रिचार्ज करने पहुंचे थे राजीव भवन में जिला कांग्रेस के विस्तारित बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कार्यकर्ताओं के दम पर सरकार बनती है। जमीनी कार्यकर्ताओं का महत्व मंच पर बैठे नेताओं से कहीं अधिक है। छत्तीसगढ़ सरकार के काम की चर्चा देशभर में हो रही है लोग छत्तीसगढ़ मॉडल की बात करते हैं तो छत्तीसगढ़ का सीना गर्व से तन जाता है। राजनीतिक पटल पर कुछ कमियां रह गई थी जिसे कई कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उभार कर रखा है जो व्यक्ति संगठन और सरकार में किसी भी पद पर है उसकी जवाबदेही पार्टी के लिए ज्यादा है। सरगुजा का संभागीय सम्मेलन में



प्रदेश में सबसे बेहतर था। शीर्ष कांग्रेस नेतृत्व ने इसकी सराहना की है। अब तक कार्यकर्ता नेता से मिलने आते थे, अब बूथ चलो अभियान में नेता मतदान केंद्र के जाकर कांग्रेस के जमीनी कार्यकर्ताओं से संवाद करेंगे। इसे बूथ चलो अभियान नाम दिया गया है। उन्होंने बूथ मैनेजमेंट का तरीका बताया श्री यादव ने कहा भूत चलो अभियान के तुरंत बाद कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण विधानसभा वार संकल्प शिविर आयोजित किए जाएंगे प्रदेश में बदली परिस्थिति का

असर आगामी 15-20 दिनों में साफ दिखाई देगा। लुंड्रा विधायक डॉ प्रीतम राम ने कहा सरकार ने घोषणा पत्र के आधे से ज्यादा वादा पूरा किया है शेष जो बचे हैं उन पर भी काम हो रहा है। कार्यकर्ताओं का मनोबल बनाए रखना जरूरी है सरकार के कामों को जमीन तक पहुंचाना उनकी ही जिम्मेदारी है उन्होंने कहा कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में सरकार की उपलब्धियों को दमदारी से रखेगा तो निश्चित तौर से कांग्रेस की जीत होगी। औपचारिक पादप बोर्ड के अध्यक्ष बाल कृष्ण

पाठक ने कार्यकर्ताओं की शिकायतों से स्तफक जताया। उन्होंने कहा कुछ कमियां रही होंगी लेकिन हम सब मिलकर इसे दूर कर लेंगे। बीस सूत्रीय कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के उपाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने कहा जो दिखाई देता है कि कई बार स्थिति विपरीत है। कांग्रेस हाईकमान ने इस स्थिति को समझा और कार्यकर्ताओं का मन टटोलने का मन बनाया। इसके बेहतर परिणाम सामने आएंगे। जिला कांग्रेस अध्यक्ष राकेश गुप्ता ने संगठन की

ओर से बात रखते हुए स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव को उपमुख्यमंत्री बना सम्मान देने के लिए कांग्रेस हाई कमान का आभार जताया। उन्होंने कहा चुनाव जीतने के लिए कार्यकर्ता मेहनत करता है चुनाव जीतने के बाद प्रशासनिक अधिकारी सरकार चलाने लगते हैं। हमें यह व्यवस्था बनानी होगी जिससे सरकार के निर्णय में संगठन की भूमिका दिखाई दे। महापौर डॉ अजय तिकी, जिला पंचायत अध्यक्ष मधु सिंह, पीसीसी उपाध्यक्ष जेपी श्रीवास्तव, महामंत्री द्वितेन्द्र मिश्रा, मातंग प्रताप सिंह, विक्रमदित्य सिंह ने भी संबोधित किया। आभार प्रदर्शन महिला कांग्रेस अध्यक्ष सिमा सोनी ने किया। इस अवसर पर विनय शर्मा, दुर्गा गुप्ता, मोहम्मद इस्लाम, सैयद अख्तर, संघ्या रावानी, सफीक खान, सुधांशु गुप्ता, सुरल अमीन सिद्दीकी, हेमंती प्रजापति, कृपा गुप्ता, आशीष वर्मा, तिलक बेहरा अनिमि केरकेड्डा अस्फाक अली, अनुप मेहता, विकल झा, नरेंद्र विश्वकर्मा, रजनीश सिंह, हिमांशु जायसवाल, नीतीशा ताम्रकार, विकास केशरी, अनिमेष सिन्हा, मिथुन सिंह, इंद्रजीत धवल, प्रभात रंजन सिन्हा, केदार पांडव, राजनाथ सिंह, ओम प्रकाश सिंह, नीरज मिश्रा, सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए।

सशक्त ऐप के माध्यम से सरगुजा पुलिस को दुपहिया वाहन चोरी के प्रकरणों में मिल रही लगातार सफलता



—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। आईजी राम गोपाल गर्ग ने अपने अनुभव के आधार पर और तकनीकी ज्ञान का उपयोग कर सरगुजा रेंज के सभी जिलों में तेनात अधीनस्थ अधिकारी, कर्मचारियों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विभाग द्वारा विभिन्न मामलों में संचारित किये गए महत्वपूर्ण जानकारी को सशक्त मोबाइल ऐप पर अधतन दर्ज कर उपयोग करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में जिला सरगुजा में पुलिस अधीक्षक सुनील शर्मा के निदेशन में सशक्त ऐप का प्रभावी रूप से उपयोग कर चोरी एवं अन्य मामलों में उपयोग कर चोरी हुए मशरूका को बरामद करने हेतु दिशा निर्देश दिए गए हैं। इस ऐप के माध्यम से पुलिस अधिकारी, कर्मचारियों को चोरी हुए वाहनों से संबंधित मामलों में जांच पड़ताल करने में महत्वपूर्ण

जानकारी तत्काल सशक्त मोबाइल ऐप के माध्यम से उपलब्ध हो रही है। सरगुजा पुलिस के सशक्त ऐप के माध्यम से वाहन चोरी के प्रकरणों में सहयोग मिलना भी शुरू हो चुका है। थाना मण्णपुर में दर्ज अपराध क्रमांक 91/23 धारा 379 एवं थाना मण्णपुर में दर्ज अपराध क्रमांक 110/23 धारा 379 एवं थाना कोतवाली में दर्ज 399/23 धारा 379 के अपराधों में चोरी हुए कुल 4 दुपहिया वाहनों को बरामद करने में सफलता मिली है। मामलों में सलित आरोपियों को सरगुजा पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है। सशक्त ऐप में चोरी हुए दुपहिया एवं चारपाहिया वाहनों के इंजन नंबर एवं चेचीस नंबर अधतन दर्ज किया गया है जिससे रेंज के समस्त अधिकारी कर्मचारी विभिन्न चेंकिंग अभियान के समय वाहनों के संदिग्ध होने पर मिलान किया जा सकता है।

धमकी भरे पोस्टर से डरे सहमे हैं मोहल्लेवासी, थाने में शिकायत



—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत घुटरापारा में बीते कुछ दिनों से अज्ञात लोगों द्वारा 22 से 23 घरों के लोगों को परेशान किया जा रहा है। वहीं वार्डवासी रात भर डर के साए में जी रहे हैं। डर वार्डवासीयों ने बताया कि पिछले एक दिन पूर्व घरों के कुंडी बाहर से लगा दिया गया था। सुबह लोग सो कर उठे तो दरवाजा बाहर से बंद था। किसी तरह कुछ लोग घर से बाहर निकले और सभी के घरों का दरवाजा खोला गया। वहीं 1 जुलाई को रात को सभी अपने-अपने घरों में सो रहे थे। गुरुवार की सुबह लोग उठा तो देख कि दो रूप के सिक्के के साथ धमकी भरा पोस्टर घर के बाहर चस्पा किया

गया है। पोस्टर में लिखा हुआ है कि 'हेलो मैं-जेड-ए... अब हमसे आप लोगों को कौन बचाएगा'। धमकी भरे पोस्टर चस्पा किए जाने से वार्डवासीयों में भय का माहौल है। अज्ञात व्यक्ति द्वारा शहर के घुटरापारा में बाहर से घरों के कुंडी बंद करने व दरवाजे के बाहर धमकी भरा पोस्टर चस्पा किए जाने से दहसत का माहौल है। परेशान वार्डवासीयों ने रविवार को कोतवाली पहुंचकर मामले की लिखित शिकायत की है। वार्डवासीयों ने थाने में शिकायत कर उचित कार्रवाई की मांग की है। शिकायत करने वालों में राजेश प्रसाद गुप्ता, आर्यन वर्मा, पूनम गुप्ता, मो. साहेब अंसारी, समसाद अली, इस्लाम, प्रवेश सहित अन्य लोग शामिल थे।

सरगुजा महाराज टी एस सिंहदेव को अचानक अंतिम समय में उपमुख्यमंत्री बनाया जाना कांग्रेस के सत्ता जाने के डर को उजागर करता है: महेश प्रसाद

—संवाददाता—
एमसीबी, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। लगभग 15 वर्ष के बाद कांग्रेस विगत साढ़े चार साल से कांग्रेस सत्ता में आई है। वह भी तब जब घोषणापत्र में कांग्रेस ने लोक लुभावन घोषणाएं की जिस घोषणा पत्र के प्रभारी सरगुजा के महाराज टी एस सिंह देव रहे। लेकिन कांग्रेस आलाकमान द्वारा सबको हैरान करते हुए भूपेश सरकार को मुख्यमंत्री के रूप में कमान दी गई और सिंहदेव को स्वास्थ्य मंत्री के रूप में संतोष करना पड़ा। लेकिन कांग्रेस की राजनीति ने कभी भी टीएस सिंह देव को गभीरता से नहीं लिया और ढाई ढाई साल की मुख्यमंत्री के वादे को भूलकर मुख्यमंत्री के रूप में भूपेश सरकार को यथावत रखा हालांकि इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं है लेकिन यह बात किसी से छुपी भी नहीं है। और इन साढ़े चार साल के कार्यकाल में कई बार सरगुजा महाराज टी एस सिंहदेव को नजरअंदाज किया गया लेकिन महाराज सिंह देव ने भी अपने सहनशीलता का परिचय दिया और कांग्रेस पार्टी से किसी अन्य दल में जाने से साफ तौर पर इंकार करते नजर आए लेकिन सोचने वाली बात यह है कि, ऐसा क्या हुआ कि जिस इंसान को हमेशा से नजरअंदाज किया गया आज उसे अचानक से

उपमुख्यमंत्री के पद पर बैठा दिया गया जबकि अब चुनाव महज कुछ महीनों में ही संपन्न होने हैं यह इस बात को साफ तौर पर दर्शाता है कि टी एस सिंहदेव का विरोध करना भूपेश सरकार के लिए बहुत बड़ी क्षति है। कांग्रेस अपने घोषणाओं पर खरी नहीं उतर सकी है इस कारण उसे अपने सत्ता जाने का डर सताने लगा है और यह इनके मतभेदों को मिटाने की नाकाम कोशिश है। हालांकि टी एस सिंहदेव एवं भूपेश बचेल ने कभी भी गुटबाजी होने की बात को स्वीकार नहीं किया लेकिन समर्थकों ने इस बात को हमेशा से साबित किया है कि वे अपने अपने नेताओं के साथ हैं कांग्रेस में कुर्सी का लोभ अत्यंत चरम पर है जिस कारण ढाई ढाई साल वाला फार्मूला इनका फेल हो गया किंतु सोचने वाली बात है कि अब कांग्रेस को सत्ता जाने का डर सताने लगा है और ऐसे में यदि कांग्रेसियों का एक भी नोब का पत्थर हिला तो कांग्रेस सरकार धड़म से जमीन पर आएगी क्योंकि जनता तो तत्कालीन सरकार की नीतियों को देख चुकी है और सरकार को उन पर पूरा भरोसा है कि अगली सरकार इनकी नहीं होगी।

कुदरगढ़ धाम का बनाया गया मास्टर प्लान

- » दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा प्रदान करने कार्य योजना बनाई गई
- » रोप पे जल्द से जल्द प्रारंभ कराने लोगों को दिलाया गया भरोसा

—संवाददाता—
सूरजपुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। जिले के ओड़गी विकास खंड स्थित मां बागेधरी लोक न्यास ट्रस्ट की बैठक सम्पन्न हुई। कुदरगढ़ धाम के मास्टर प्लान बनाकर विकास कार्य करने के साथ साथ दूर दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा प्रदान करने कार्य योजना बनाई गई साथ ही रोप पे जल्द से जल्द प्रारंभ कराने का भरोसा दिला या गया। जन आस्था के केंद्र मां बागेधरी धाम कुदरगढ़ में मां कुदरगढ़ी का मां बागेधरी देवी ट्रस्ट दान में प्राप्त हुए स्वर्ण आभूषणों से देवी का स्वर्ण चेहरा, मुण्ड माल व स्वर्ण छत्र बनाने की सहमति बनते हुए बैठक में कुदरगढ़ धाम के मास्टर प्लान व रोप-पे की प्रगति को लेकर चर्चा हुई। स्थानीय विस्थापक पारसनाथ गजवाड़े, कलेक्टर संजय अग्रवाल, सीईओ लीना कोसम सहित ट्रस्ट के निर्माण समिति अध्यक्ष भीमसेन अग्रवाल जेधून रजिस्टर सिंह, आजीवन सदस्य व ट्रस्ट की प्रमुख सुभाष गोयल, अखिलेश



प्रताप सिंह ऑनकर पाण्डेय की उपस्थिति में एक बड़ी बैठक कुदरगढ़ धाम में आयोजित हुई। 13 एजेंडों पर चर्चा के साथ चैत्र नवरात्रि के उपलक्ष्य में बैठक काफ़ी महत्वपूर्ण व धाम के लिए उपयोगी साबित हुई। बैठक में दान में प्राप्त आभूषणों की गणना, रखा-रखाव, लॉकर, आय-व्यय की जानकारी के साथ अनुपयोगी सामग्री के लिए समिति का गठन किया गया। वहीं जवनों के रख-रखाव, साफ-सफाई, वाहन बेरियर के लिए जवन, मॉडरन परिसर में दान कांटर के लिए जवन, ज्योति कलश भवन के निर्माण पर चर्चा करने सहित बारिश के समय में मेला परिसर की व्यवस्था, लोक न्यास के कर्मचारियों का कार्य विभाजन, पार्क व झूले की

व्यवस्था सहित मेला परिसर की शासकीय भूमि का सीमांकन व डुकान निर्माण के साथ निर्मित शेड में स्टज व जैंगम रूम के निर्माण के निर्णय सभी की सहमति व आपसी विचार-विमर्श से लिया गया। वहीं मॉडरन कमेटी के पास जमा लगभग आधे किलो सोने से माता का स्वर्ण मुकुट बनाने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही कुदरगढ़ धाम के तालाब का गहरीकरण व सौन्दर्यकरण करने का प्रस्ताव सदस्यों के द्वारा लाया गया। बैठक के उपलक्ष्य सदस्यों व अधिकारियों ने प्रस्तावित कार्यों के लिए स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान कलेक्टर संजय अग्रवाल ने मातहतों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि कुदरगढ़ देवी

धाम में चैत्र नवरात्रि पर देवी की विशेष पूजा के साथ विशाल मेले में छत्तीसगढ़ के साथ-साथ मध्यप्रदेश, यूपी, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, दिल्ली इत्यादि प्रांतों से बड़ी तादाद में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। वहीं सरगुजा अंचल के लिए आस्था की देवी के रूप में कुदरगढ़ी मां के दरबार में बारह मास श्रद्धालु बड़ी तादाद में पहुंचते हैं। कुदरगढ़ ट्रस्ट की बैठक के दौरान बलराम सोनी, संजय यादव, आशीष प्रताप सिंह, प्रदीप द्विवेदी, मुकेश अग्रवाल, प्रदीप राजवाड़े, राहुल जायसवाल सहित बड़ी तादाद में ट्रस्ट के सदस्य व गणमान्यजन उपस्थित थे।

कच्चा मुक्त तालाब की हुई सफाई

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। गांधी नगर तुरां पानी वार्ड क्रमांक 3 स्थित कच्चा मुक्त शासकीय तालाब की साफ सफाई रविवार को की गई। इस दौरान महापौर डॉ. अजय तिकी, महापौर परिषद के सदस्य द्वितेन्द्र मिश्रा, पार्षद गीता रजक सहित वार्डवासी शामिल रहे। इस दौरान गीता प्रजापति, मंजूषा भगत, पूर्व पार्षद व जिला महिला कांग्रेस की अध्यक्ष सीमा सोनी, जिला युवक कांग्रेस के अध्यक्ष विकल झा, महामंत्री रजनीश सिंह, प्रवक्ता नरेंद्र विस्वकर्मा, निक्की खान, विक्की गुप्ता, उत्तम राजवाड़े, रजनी महंत, शंकर प्रजापति, कुसुम मिंज, अनिल यादव, श्यामदीन पांडेय, कैलाश दुबे, राकेश सिंह, साम बाई, पूर्व पार्षद कला चंद साव, मनोज मिश्रा, मंजु पाठक, कृष्ण सूरारी शर्मा, अनुराधा दास, अनिल पांडे, शैलेश उपाध्याय, प्रदीप केशरी सहित काफी संख्या में वार्डवासी शामिल रहे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव महापर्व आज

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री अवधूत भगवान राम सेवा संस्थान लालमटो में 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव महापर्व मनाया जाएगा। आश्रम में गुरु पूजन के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर काफ़ी संख्या में भक्तों को शामिल होने की अपील की है।

नियमितिकरण की मांग को लेकर विद्यामितां कल्याण संघ ने दिया एक दिवसीय धरना

—संवाददाता—
अम्बिकापुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। चुनावी जनोपषणा व 2 अंक बोनास का विरोध में विद्यामितां राज्य अतिथि शिक्षक कल्याण संघ ने रविवार को शहर के गांधी चौक स्थित डाटा सेंटर के सामने एक दिवसीय धरना दिया। धरना प्रदर्शन के बाद शाम को मुख्यमंत्री के नाम नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा।

में नियुक्ति दी गई है। सांघ का कहना है कि चुनाव के दौरान वर्ष 2018 में कांग्रेस के चुनावी जनोपषणा-पत्र में जाने के बाद भी राज्य अतिथि शिक्षक (विद्यामितां) के नियमितिकरण हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा कोई पहल नहीं की जा रही है। इसके साथ ही संघ ने दो अंक बोनास का विरोध करे हुए रविवार को दोनों प्रमुख मांगों को लेकर विद्यामितां राज्य अतिथि शिक्षक कल्याण संघ ने रविवार को शहर के गांधी चौक स्थित डाटा सेंटर के सामने एक दिवसीय धरना दिया। धरना प्रदर्शन के बाद शाम को मुख्यमंत्री के नाम नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते हुए नियमितिकरण की मांग की है।

विद्यामितां जो छत्तीसगढ़ के नागरिक है, उनकी नियमितिकरण, रिक्त पदों पर प्राथमिकता से की जायगी। कांग्रेस सरकार के आने के चार साल से अधिक का समय व्यतीत हो

भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ द्वारा मनाया गया डॉक्टर दिवस

—संवाददाता—
बैकुंठपुर, 02 जुलाई 2023 (घटती-घटना)। निष्पक्ष सेवा भाव के लिए जाने जाने वाले डॉक्टर समुदाय के लिए आज का दिन विशेष होता है सारा देश आज डॉक्टर दिवस मना रहा है उसी तारतम्य में भारतीय जनता पार्टी चिकित्सा प्रकोष्ठ डॉ राकेश शर्मा फैन क्लब, डॉक्टर शर्मक अस्पताल महल पारा की संपुंक टीम ने महल पारा स्थित डॉ राकेश शर्मा की कार्यालय में डॉक्टर डे धूमधाम से मनाया इस

अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष श्री कृष्ण बिहारी जयसवाल जिला उपाध्यक्ष शैलेश शिवहरे पूर्व नगरपालिका उपाध्यक्ष सुभाष साहू मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ शंकर, नगर पालिका पार्षद संजय जयसवाल अनिल खटीक ममता गोयन डॉक्टर एन सिंह डॉक्टर सुनील गुप्ता डॉक्टर संकल्प शर्मा डॉक्टर अपराजिता शर्मा डॉक्टर गुप्ता प्रदीप तिवारी महेंद्र गुप्ता फालाल गौयल अनुराग दुबे अनुराग दुबे ध्रुव जयसवाल सहित कई कार्यकर्ता स्थानीय उपस्थित रहे।

सहित कई कार्यकर्ता स्थानीय उपस्थित रहे।

ऊसर भूमि को बनाया जा सकता है उपजाऊ



ऊसर वह कहलाती भूमि कहलाती है, जिसमें कुछ भी पैदा नहीं होता। यदि होता भी है तो बहुत ही नाममात्र के लिए। भूमि में ऊसरीलापन मिट्टी में लवणता या क्षारीयता अथवा दोनों की ही अधिकता के कारण होता है। ऊसर भूमि तीन प्रकार की होती है-

1. लवणीय मृदा- इस प्रकार की मृदा में घुलनशील सोडियम नमक की अधिकता होती है।

पहचान- स्थानीय भाषा में इस मृदा को रेह, रेहटा या नमकीन मृदा (सेलाइन स्वाइल) कहते हैं। ऐसी मृदा में भूमि की सतह पर उभरे, फूले, सफेद, सिलेटी रंग के लवण दिखाई देते हैं जो कि समूहों व टुकड़ों में मिलते हैं। ऐसी भूमि पर चलने पर अच्छा लगता है। लवणीय भूमि की सतह की मृदा एवं उसके नीचे की मृदा कड़ी एवं कम्पैक्ट नहीं होती है।

2. लवणीय-क्षारीय मृदा- इस प्रकार की मृदा में घुलनशील सोडियम की अधिकता के साथ-साथ विनियमशील सोडियम की भी अधिकता होती है।

पहचान- साधारण भाषा में इस मृदा को ऊसर, रेह कहते हैं। इस मृदा में लवणीय-क्षारीय भूमि के मिले जुले गुण रहते हैं। भूमि की ऊपरी सतह भूरे रंग की होती है जिस पर रेह या सफेद लवण प्रचुर मात्रा में रहते हैं तथा नीचे की सतह क्षारीय भूमि की भांति सख्त होती है। इस भूमि में नीचे कंकड़ भी मिलता है। ऐसी मृदाओं में टुकड़ों में कहीं-कहीं पर सतह पर लवण व कहीं-कहीं पर ऊसर घास भी दिखाई देती है।

क्षारीय मृदा- क्षारीय मृदा देखने में काली या स्लेटी रंग की होती है। प्रदेश में पायी जाने वाले क्षारीय मृदा में विनियमशील सोडियम की अधिकता होती है तथा इसका सुधान मृदा सुधारक यथा जिप्सम, पायरइट आदि के उपयोग के बिना संभव नहीं होता है।

पहचान- इस मृदा को स्थानीय भाषा में ऊसर, बजर, कहर या एल्कली स्वाइल कहते हैं। भूमि चौरस जिस पर काले भूरे रंग के अवशेष पदार्थ धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। ऐसी भूमि की सतह सीमेंट की भांति बहुत कड़ी और कम्पैक्ट होती है। भूमि की भौतिक दशा बहुत खराब होती है जिससे गड़बड़ों में पानी बहुत दिनों तक भरा रहता है।

ऊसर बनने के कारण

• वर्षा अधिक किन्तु जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होना।

• भूमिगत जल स्तर ऊँचा होना।

• नहरी क्षेत्रों में जल रिसाव का होना।

• भूमि को अधिक समय से परती छोड़ना।

• कम वर्षा एवं तापमान का अधिक होना।

ऊसर भूमि को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये जाते हैं-

1. मेड़बन्दी- ऊसर सुधार के लिए ऊसरीले खेतों में ऊँची और मजबूत मेड़ बनाने का कार्य सितम्बर-अक्टूबर तक अवश्य पूर्ण कर लेना चाहिए। (मेड़ का आधार 90 सेमी. ऊँचाई 30 सेमी., टाप 30 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.18 वर्ग मी. होना चाहिए)

2. स्क्रैपिंग- जिन खेतों में लवण की सफेद चादर सी दिखाई देती है उन खेतों में मृदा की ऊपरी परत को फावड़ा की सहायता से खुरचकर इकट्ठा कर उसे किसी गहरे गड्ढे में दबा देते हैं अथवा बड़े नाले के द्वारा बहते हुए पानी में गिरा देते हैं।

3. सब प्लाटिंग- अच्छे ऊसर सुधार हेतु खेत को छोटे-छोटे टुकड़ों में (लगभग 18-20 डेसीबल) बनायें।

4. जुताई/समतलीकरण- ऊसर खेतों का सुधार तभी संभव है जब खेत ठीक से समतल किया गया हो। इसके लिए सूक्ष्म समतलीकरण करने हेतु लेजर लेवलर के द्वारा समतलीकरण किया जाय जिसे कृषि विभाग के उप कृषि निदेशक से सम्पर्क कर उपयोग में लाया जा सकता है।

5. खेत नाली (लिंक ड्रेन)- सभी ऊसरीले खेतों में भूमि के ढाल के अनुसार निचली तरु या दो खेतों के बीच की मेड़ को फाड़कर फील्ड ड्रेन तैयार की जाती है

जिसका दूसरा सिरा सम्पर्क नाली (लिंक ड्रेन) से जोड़ा जाता है। (आकार-मुहफाड़ 90 सेमी. गहराई 30 सेमी., तली 30 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.18 वर्ग मी.)

6. जल उपयोग समूहों से निकली खेत नालियों (फील्ड ड्रेन) को सम्पर्क नाली में गिराया जाता है। सम्पर्क नाली का एक सिरा मुख्य नाले में गिरता है। आकार-मुहफाड़ 165 सेमी. गहराई 60 सेमी. तली 45 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.63 वर्ग मी. (100 हे. हेतु)।

7. मुख्य नाला- ऊसरीले खेतों से लवणीय पानी खेत नाली के द्वारा लिंक ड्रेन में तथा लिंक ड्रेन को मुख्य नाला से जोड़ा जाता है। मुख्य नाला पूरे ऊसर क्षेत्र के लवणीय पानी को नदी में ले जाता है। इसकी खुदाई एवं सफाई का कार्य सिंचाई विभाग द्वारा कराया जाता है।

13. लीचिंग- जिप्सम मिक्सिंग के उपरांत (15 जून से 30 जून के मध्य) खेतों में 15 सेमी. ऊँचा पानी भरते हैं जिसे 10-12 दिन बाद जल निकास नाली के द्वारा निकाल देते हैं। यदि बीच में पानी सूख जाता है तो उसमें पुनः बोरिंग द्वारा पानी भर जाता है।

ऊसरीले खेतों में जीवांश खाद/कार्बनिक खादों का लगातार प्रयोग करने से भी लवणीय मृदा का सुधार होता है।

14- नर्सनी की तैयार- निगम द्वारा ऊसर भूमि हेतु उपलब्ध कराये गये खरीफ निवेश (धान, डी.ए.पी. यूरिया एवं जिंक सल्फेट) को 15 मई के बाद उपजाऊ जमीन में जहाँ पर सिंचाई का अच्छा साधन हो, वहाँ पर 60 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज का प्रयोग करते हैं। रोपाई के क्षेत्र के 1/10 हिस्से में धान की नर्सरी डाली जाती है।



8. बोरिंग- प्रत्येक जल उपयोग समूह के 4 हे. क्षेत्र में सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था हेतु बोरिंग के अभाव में समूह के सबसे ऊँचे खेत में बोरिंग प्रस्तावित कर निगम द्वारा बोरिंग हेतु पी.वी.सी. पाइप, रिफ्लेक्स वाल्व के साथ ही बोरिंग मैकेनिक एवं मजदूरों हेतु सफल बोरिंग होने पर मापन के अनुसार निगम द्वारा समूह के खते में भुगतान किया जाता है।

9. नलकूप व्यवस्था- पम्पसेट की व्यवस्था बोरिंग धारक को स्वयं से अपने संसाधनों द्वारा समूह के सामूहिक सहयोग से क्रय किया जाता है। इस हेतु निगम द्वारा कोई अनुदान की सुविधा नहीं दी जाती है।

10. सिंचाई नाली- आकार-मुहफाड़ 120 सेमी. गहराई 30 सेमी. तली 30 सेमी. तथा सेक्शन एरिया 0.225 वर्ग मी.।

11. फ्लैशिंग- लवणीय मृदा से फ्री साल्ट को पानी में घोलकर निकालने हेतु ऊसरीले खेतों में 15 सेमी. ऊँचा 48 घण्टे हेतु पानी भरते हैं जिसमें घुलशील लवण पानी में घुल जाते हैं जिसे जल निकास नाली द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। इस सम्पूर्ण क्रिया को फ्लैशिंग कहल जाता है। यह क्रिया सदैव जिप्सम मिक्सिंग से पूर्ण की जाती है।

12. जिप्सम मिक्सिंग- फ्लैशिंग के उपरांत ओट आने पर भूमि की श्रेणी के अनुसार प्राप्त करायी गयी जिप्सम के बैग को समान-समान दूरी पर खोलते हैं। तत्पश्चात् हाथ से पूरे खेत में एक समान जिप्सम बिखेर कर कल्टीवेटर द्वारा हल्की जुताई (3-5 सेमी.) करते हैं एवं पाटा नहीं लगाते हैं। जिप्सम मिक्सिंग का उपयोग समय जून माह होता है।

है।

15. रोपाई- जब धान की नर्सरी 35 दिन की हो जाय तो उसकी रोपाई लीचिंग के उपरांत बोरिंग से अच्छा पानी भरकर एक वर्ग मी. में 65-70 स्थान पर 4-5 पौधों की रोपाई 25 जून से 10 जुलाई के बीच सम्पन्न कर लेते हैं।

16. धान फसल की देखभाल- रोपाई के एक सप्ताह बाद खेत से पानी निकाल दें। कुछ सूखने के बाद यदि वर्षा न हो तो धान की सिंचाई करें। पानी भरे रहने के कारण ऊसरीली मृदा में लवण की अधिकता से ही काई का प्रकोप होता है। इसके लिए खुली धूप में 0.2-0.3 प्रतिशत कार्ब सल्फेट (तूरिया) का घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा सूखी झाड़ी से काई को तोड़कर जल निकास नाली से बाहर बहा दें। धान की फसल हेतु दी जाने वाली यूरिया की मात्रा को बराबर-बराबर चार भागों में बांटकर पहला भाग रोपाई के 13-15 दिन, दूसरा भाग 27-30 दिन, तीसरा भाग 45-50 दिन तथा चौथा भाग बालियां निकलते समय (65-70) दिन पर प्रयोग किया जाय।

17. धान की कटाई- जब धान की बालियां पीली पड़कर नीचे की तरफ झुकने लगे तो ऐसी दशा में धान की कटाई जमीन की सतह से 6 इंच ऊपर से करते हैं।

18- गेहूँ के खेत की तैयारी करना- धान के टुकों को सड़ाने के लिए नमी की अवस्था में 40 किग्रा. यूरिया प्रति हे. बुरकाव कर हैरो/कल्टीवेटर द्वारा जुताई कर पाटा चला देते हैं। एक सप्ताह के बाद कल्टीवेटर से जुताई कर खेत की तैयारी कर लेते हैं। जिन क्षेत्रों में धान की कटाई विलम्ब से हो वहाँ पर सीधे जीरोटिल फर्टिसीड ड्रिल से बुवाई करें।

19. गेहूँ की देखभाल- यदि बीज पहले से शोषित नहीं हैं तो बोने से पूर्व बीज को कार्बोन्डाजिम अथवा कार्बोक्सिन रसायन 2.5 प्रति किग्रा. बीज (100 किग्रा. में 250 ग्राम दवा) की दर से शोषित कर बोवाई करें। बुवाई के समय बेसल के रूप में 96 किग्रा. यूरिया, 87 किग्रा. डी.ए.पी., 33 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटैश तथा 25 किग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हे. खेत की तैयारी के समय जमीन में मिला देते हैं तथा जिंक सल्फेट को डी.ए.पी.



उर्वरक के साथ मिश्रण कर प्रयोग नहीं करते हैं। यूरिया की शेष मात्रा को दो भागों में बांटकर प्रथम पहली सिंचाई 28 दिन के बाद ताजमूल अवस्था पर करने के पश्चात् ओट पर 65 किग्रा. तथा तीसरी सिंचाई के बाद 60-65 दिन पर गांठ बनने की अवस्था पर ओट आने पर 65 किग्रा. यूरिया की टाप ड्रेसिंग करते हैं। गेहूँ में पांच सिंचाई की दशा में पहली ताजमूल अवस्था में बुवाई के 28 दिन बाद, दूसरी कल्ले फूटते समय बुवाई के 40-45 दिन बाद, तीसरी गांठ बनने बनने पर 60-65 दिन बाद, चौथी बाली निकलते समय बुवाई के 80-85 दिन बाद, पांचवीं दूधिया अवस्था में बुवाई के 100-105 दिन तथा छठी दान पकने पर 115-120 दिन पर सिंचाई करते हैं। यदि मात्र तीन ही सिंचाई उपलब्ध है तो पहली ताजमूल बुवाई के 28 दिन बाद, दूसरी गांठ बनने पर बुवाई के 60-65 दिन बाद, तीसरी दूधिया अवस्था में बुवाई के 100-105 दिन बाद सिंचाई करनी चाहिए। ऊसरीले क्षेत्रों में सिंचाई हल्की करनी चाहिए।

20. गेहूँ की कटाई-मड़ाई एवं भण्डारण- फसल की बालियां पक जाने पर फसल को तुरन्त काट लेना चाहिए। कटाई के बाद पावर थ्रेसर द्वारा मड़ाई करके अनाज को अलग कर लेना चाहिए। अनाज को सुखाने के उपरांत धातु की बनी बखालियों में भण्डारण करना चाहिए।

21. हरी खाद ढँचा- अच्छे ऊसर सुधार के लिए ढँचा की हरी खाद बहुत उपयोगी होती है। हरी खाद के लिए ढँचा एक सर्वोत्तम फसल है। ऊसर में ढँचा की आसानी से हरी खाद तैयार की जाती है। एक हे. के लिए 60 किग्रा. बीज की आवश्यकता पड़ती है जिसे 24 घण्टे पानी में भिगोकर उसे जिप्सम से उपचारित कर बुवाई करने से अंकुरण अच्छा होता है। इसमें प्रत्येक 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते हुए 45 दिन पर जब फसल 1.5 से 2.0 फुट लम्बी हो जाय तो नमी की दशा में पावर डिस्क हैरो के द्वारा पलटाई कर देते हैं (आवश्यकता पड़ने पर 40 किग्रा. है. यूरिया का छिड़काव भी किया जा सकता है जिसे अगली फसल में दी जाने वाली यूरिया की मात्रा से कम कर देना चाहिए) ढँचा की फसल से जीवांश पदार्थ के साथ लगभग एक बोरी यूरिया के बराबर नत्रजन की जमीन में बढोत्तरी होती है जो कि जमीन में संरक्षित रहती है। इस प्रकार की प्रक्रिया अपनाने से ऊसर भूमि धीरे-धीरे उपजाऊ हो जाती है। ऊसर भूमि के सुधर जाने के बाद कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें ताकि भूमि फिर से ऊसर न होने पाये।

- सुधारें गये क्षेत्र को कभी खानी न छोड़ें।
- जैविक खाद जैसे गोबर की सड़ी खाद, कम्पोस्ट, हरी खादों का अधिकाधिक प्रयोग करें।
- सिंचाई हल्की करें।
- नहरी सिंचाई से बचें।
- जल निकाल का विशेष ध्यान रखें।

ट्रक से कुचलकर मरने वालों की संख्या 51 तक पहुंची, 32 घायल

केरिचो । पश्चिमी केन्या में एक सड़क दुर्घटना में ट्रक से कुचलकर मरने वालों की संख्या बढ़कर 51 हो गई है । इसके अलावा 32 लोग घायल बताए जा रहे हैं । यहां की पुलिस ने बताया कि अभी बचाव के प्रयास जारी हैं । मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, शुक्रवार शाम को केरिचो काउंटी में नाकुरु-केरिचो राजमार्ग पर शिपिंग कंटेनर ले जा रहे एक ट्रक के चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिसके बाद ट्रक अन्य कारों से टकरा गया और पैदल चल रहे लोगों पर चढ़ गया । रिपट वैली क्षेत्रीय पुलिस कमांडर टॉम ओडेरो ने शनिवार को कहा हमारे पास अब 51 शव हैं । कई अन्य घायल हो गए हैं और अस्पतालों में हैं । हादसे में कम से कम 32 लोग घायल हैं जिनका इलाज चल रहा है । प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ड्राइवर सड़क पर खड़ी एक मिनीबस से टकराने से बचने की कोशिश कर रहा था, तभी ट्रक नियंत्रण से बाहर हो गया । टकराने से कई मिनी बसें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं । हालांकि भारी बारिश के कारण बचाव कार्य धीमा हो गया । घटनास्थल का दौरा करने वाले सड़क, परिवहन और लोक निर्माण के कैबिनेट सचिव किपचुंबा मुकांमेन ने स्थानीय अधिकारियों से त्रासदी के बाद सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के उपायों के तहत केरीचो काउंटी के लीडियानी जंक्शन पर स्पीड ब्रेक लगाने के लिए कहा । वहीं आंतरिक और राष्ट्रीय प्रशासन के कैबिनेट सचिव किथुर किडिकी ने देश भर के पुलिस अधिकारियों को यातायात नियमों को लागू करने में तेजी लाने का निर्देश दिया । जारी आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी से अब तक दुर्घटनाओं में 2,124 लोगों की मौत हो चुकी है । राष्ट्रीय परिवहन और सुरक्षा प्राधिकरण के अनुसार, राजमार्गों पर सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य और निजी क्षेत्र के दोस प्रयासों के बावजूद केन्या में हर साल सड़क दुर्घटनाओं में अनुमानित 3,000 केन्याई मर जाते हैं ।

2 माह बाद फिर नासा ने साधा इनजेन्युटी मार्स हेलीकॉप्टर से संपर्क

वाशिंगटन । अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा अपने इनजेन्युटी मार्स हेलीकॉप्टर से पूरे दो माह बाद फिर से संपर्क साध लिया है । नासा ने इसकी जानकारी दी है । बता दें कि नासा ने फरवरी 2021 में मंगल ग्रह पर एक मिशन की शुरुआत की थी । मिशन के तहत एक मिनी हेलीकॉप्टर इनजेन्युटी और प्रीजर्वेस रोवर मंगल ग्रह पर भेजा गया था । इस मिशन की कंट्रोलर नासा की जेट प्रोपल्शन लैबोरेट्री (जेपीएल) का 26 अप्रैल को अपने करीब 1.8 किलो वजन की इनजेन्युटी हेलीकॉप्टर से संपर्क टूट गया । इनजेन्युटी की 52वीं उड़ान 26 अप्रैल को शुरू हुई, लेकिन कैलिफोर्निया में नासा की जेपीएल में मिशन नियंत्रकों ने दो मिनट, 1,191-फुट (363-मीटर) की उड़ान के बाद इसके सतह पर उतरते ही संपर्क खो दिया । मालूम हो कि मंगल का यह क्षेत्र काफी पथरीला है, इस कारण यहां कोई भी मिशन करना काफी मुश्किलो भरा है । इस कारण यहां कम्युनिकेशन टूटने का भी खतरा रहता है । नासा को भी इसी खतरे की आशंका थी । बहरहाल जेपीएल में इनजेन्युटी टीम के प्रमुख जोश एंडरसन ने बताया कि 'मिशन में अब तक इनजेन्युटी से सुने बिना यह खबरे लंबा समय है । बता दें कि मिशन के तहत इनजेन्युटी हेलीकॉप्टर को उड़ान भरते हुए मंगल ग्रह की फोटो नासा के पास भेजनी हैं और रोवर को मंगल की जमीन से सैपल इकट्ठा करने हैं । एंडरसन ने कहा 'इनजेन्युटी को इस तरह डिजाइन किया गया है कि जब इस तरह का संचार अंतराल होता है, तब वह खुद की देखभाल करता है, लेकिन अंत में संपर्क फिर से स्थापित होने के बाद हम सभी को राहत की अनुभूति हुई ।' नासा को उम्मीद है कि इस मिशन से मंगल को लेकर कई अहम जानकारीयां प्राप्त हो सकती हैं ।

रूस की गोलाबारी से यूक्रेन में तीन की मौत व 17 लोग जख्मी

कीव । रूस की गोलाबारी से यूक्रेन में तीन लोगों की मौत हो गई है । जानकारी के अनुसार यूक्रेन के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र में रूस लगातार गोलाबारी कर रहा है । इसमें कम से कम तीन और नागरिकों की मौत हो गई तथा 17 अन्य घायल हो गए । यह हमला ऐसे वक्त में हुआ जब स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने रूस के खिलाफ यूक्रेन की लड़ाई के लिए अपने देश और यूरोपीय संघ के समर्थन को दर्शाते हुए कीव की यात्रा शुरू की है । यूक्रेन की संसद को दिए संबोधन में सांचेज ने कहा, 'जब तक यह युद्ध चलेगा, हम आपके साथ रहेंगे ।' उनके संबोधन के दौरान कई बार संसद सदस्यों ने खड़े होकर उनका सम्मान व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि मैं यूक्रेन पर रूस के गैरकानूनी और अनुचित आक्रमण के खिलाफ यूरोपीय संघ तथा यूरोप के दृढ़ संकल्प को व्यक्त करने के लिए यहां आया हूँ । उन्होंने यह संबोधन उस दिन दिया जब स्पेन ने 27 सदस्यीय यूरोपीय संघ की अध्यक्षता संभाली है । यूरोपीय संघ की अध्यक्षता हर छह महीने में बारी-बारी से देशों को दी जाती है । बाद में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेन्स्की के साथ एक संवाददाता सम्मेलन में सांचेज ने घोषणा की कि स्पेन चार 'लेपर्ड टैंक' और बखतरबंद वाहन समेत यूक्रेन को और अधिक हथियार उपलब्ध कराएगा । स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने यह भी कहा कि स्पेन पुनर्निर्माण की जरूरतों में मदद करने के लिए अतिरिक्त 5.5 करोड़ यूरो की मदद मुहैया कराएगा । वहीं, दोनेत्स्क के गवर्नर पावलो किरिलेंको ने बताया कि यूक्रेन में शुक्रवार और शनिवार रात को रूस की गोलाबारी में कम से कम तीन नागरिकों की मौत हो गई तथा 17 अन्य घायल हो गए । खेरसॉन के गवर्नर ओलेक्सांद्र प्रोक्रुदिन ने बताया कि दक्षिणी खेरसॉन में शुक्रवार और शनिवार रात को हमले में एक बच्चे समेत पांच लोग घायल हो गए । संभावित शांति वार्ता को लेकर सांचेज ने कहा 'कि शांति वार्ता के लिए शर्तें और वक्त केवल यूक्रेन तय कर सकता है । अन्य देश तथा क्षेत्र शांति योजनाओं का प्रस्ताव दे रहे हैं । उनकी भागीदारी काफी सराहनीय है, लेकिन हम पूरी तरह से उन्हें स्वीकार नहीं कर सकते ।

लुसी गुओ दुनिया की दूसरी सबसे अमीर सेल्फ मेड महिला

-फिट इतनी कि रोज दौड़ती हैं 10-20 मील

सैन फ्रांसिस्को । इस्केल एआई की को-फाउंडर लुसी गुओ दुनिया की दूसरी सबसे अमीर सेल्फ मेड महिला हैं । लुसी ने साल 2018 में स्केल एआई छोड़ दिया था । सेल्फ मेड अमीर महिलाओं की लिस्ट में फोर्ब्स ने काइली जेनर के बाद लुसी गुओ को रखा है । कंपनी में उनकी करीब 6 फीसदी की हिस्सेदारी है । लुसी बचपन से ही कोडिंग की तरफ आकर्षित थीं और माता-पिता की तरफ से उनपर थोड़ा प्रेशर भी था । लुसी के माता-पिता इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थे और लुसी को तकनीकी फील्ड में जाने के लिए मना करते थे । उनका मानना था कि इस फील्ड में लड़कियों के लिए सफलता पाना मुश्किल है । हालांकि, लुसी ने फिर भी अपने मन का काम किया और आगे बढ़ीं । लुसी ने कंप्यूटर साइंस की डिग्री लेने के लिए कार्नीज मेलन में दाखिला लिया था, लेकिन 2014 में थील फेलोशिप मिलने के बाद उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया । इस फेलोशिप के जरिए युवाओं को 1 लाख डॉलर दिए जाते हैं । स्कॉलरशिप किसे मिलेगी इसका चयन उनकी क्राइलियत के बल पर होता है । आगे चलकर लुसी ने फेसबुक में इंटरशिप की और उसके बाद उन्होंने कोरा और स्नेपचेट में प्रोडक्ट डिजाइनर के तौर पर हायर कर लिया गया । लुसी की मुलाकात एलेक्जेंडर से 2015 में हुई थी । दोनों अपनी फील्ड के मास्टर थे और मुलाकात के पहले ही साल में उन्होंने स्केल एआई की शुरुआत कर दी थी । लुसी और वांग की जोड़ी ने दो सालों में ही कमाल कर दिखाया । उनकी कंपनी को लोगों ने सराहा और उन्हें फंडिंग भी मिली । 2018 में लुसी और वांग का साथ छूट गया । ऐसा क्यों हुआ उसकी कोई वजह सामने नहीं आई, लेकिन लुसी अब भी उस कंपनी की 6 प्रतिशत की हिस्सेदार हैं । कंपनी छोड़ने के बाद लुसी ने अपने कई प्रोजेक्ट्स पर काम किया । उन्होंने बैकएंड कैपिटल की शुरुआत की और उसके बाद पासेस कंपनी को ज्वाइन किया । रिपोर्ट्स के मुताबिक, लुसी का नेट वर्थ लगभग 440 मिलियन डॉलर का है । उन्होंने कोडिंग के साथ-साथ फाइनेंशियल इनवेस्टमेंट और बिजनेस मॉडल्स के सहारे भी अपना बैंक बैलेंस बढ़ाया है । स्केल एआई के बाद उन्होंने बैकएंड कैपिटल की भी स्थापना की । लुसी फिलहाल पासेस की सीईओ के पद पर कार्यरत हैं । उन्हें उनकी फिटनेस के लिए भी जाना जाता है और उनकी गिनती दुनिया के सबसे फिट सीईओ में से एक में होती है । बता दें कि स्केल एआई की नेटवर्क फिलहाल 7.3 बिलियन डॉलर है । लुसी ने कॉलेज के दिनों में वांग के साथ मिलकर इस मल्टी मिलियन डॉलर कंपनी की शुरुआत की थी । लुसी ने न सिर्फ तकनीकी की दुनिया में, बल्कि फाइनेंस की फील्ड में भी अपना नाम बना लिया है ।



सियोल में एलजीबीटी अधिकारियों को लेकर दक्षिण कोरियाई लोगों का एक समूह सड़कों पर उतर आया ।

रुकने का नाम नहीं ले रही फ्रांस में हिंसा, आगजनी व लूटपाट भी हो रही

-पुलिस गोलीबारी में मारे गए नाहेल को दफनाया, राष्ट्रपति मैक्रों ने स्थगित किया जर्मनी दौरा

पेरिस (एजेंसी) । फ्रांस में हिंसा रुकने का नाम नहीं ले रही है । यहां हालांकि पुलिस की गोलीबारी में मारे गए किशोर को शनिवार को दफना दिया गया । घटना के बाद भारी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद चौथी रात को व्यापक विरोध-प्रदर्शन हुए । आगजनी और लूटपाट के कई दृश्य यहां दिखाई दे रहे हैं । इस दौरान देशभर में 1,311 लोगों को गिरफ्तार किया गया । हिंसक विरोध-प्रदर्शनों के मद्देनजर फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने जर्मनी का दौरा रद्द कर दिया है । फ्रांस के गृह मंत्रालय ने बताया कि हिंसा रोकने के लिए देशभर में 45,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है । मंगलवार रात को प्रदर्शन की शुरुआत के बाद से पुलिस ने कुल 2,400 लोगों को गिरफ्तार किया है । इनमें से आधी से ज्यादा गिरफ्तारियां हिंसा की चौथी रात को हुईं ।



रुकाओं में तोड़फोड़ और आगजनी की । फ्रांस में हिंसा का असर मैक्रों की जर्मनी यात्रा पर पड़ा है । जर्मनी के राष्ट्रपति फ्रैंक-वाल्टर स्टैनमीयर के कार्यालय ने बताया कि मैक्रों ने शनिवार को फोन करके जर्मनी की अपनी पहली राजकीय यात्रा को स्थगित करने का अनुरोध किया । गौरतलब है कि मैक्रों रविवार शाम को जर्मनी रवाना होने वाले थे । पिछले 23 वर्षों में फ्रांस के किसी राष्ट्रपति की यह जर्मनी की पहली राजकीय यात्रा होती । मैक्रों के कार्यालय ने बताया कि राष्ट्रपति ने स्टैनमीयर से बात की और देश में सुरक्षा स्थिति को देखते हुए कहा कि वह आने वाले दिनों में फ्रांस में रहना चाहते हैं । इस बीच, नैन्टेरे के उपनगर में पुलिस की गोलीबारी में

मारे गए किशोर नाहेल को अंतिम विदाई दी गई । कब्रिस्तान में ताबूत लाए जाने के दौरान बड़ी संख्या में लोग सड़कों के किनारे खड़े थे ।

इस घटना के बाद पेरिस से मॉर्सिले और ल्योन तक हिंसा की आग फैल गई है, जिसमें सैकड़ों पुलिसकर्मी और दमकलकर्मी घायल हुए हैं । इससे पहले, नाहेल की मां मौनिया एम ने मीडिया से कहा कि वह उस पुलिस अधिकारी से बहुत अधिक क्रोधित हैं, जिसने उनके बच्चे को मार डाला ।

उन्होंने कहा, वह कुछ-कुछ अरबी बच्चों की तरह दिखता था । वह अधिकारी नाहेल की जान लेना चाहता था । किशोर के परिवार की विरासत अल्जीरिया से जुड़ी है । मौनिया ने कहा, एक पुलिस अधिकारी अपनी बंदूक लेकर हमारे बच्चों पर गोली नहीं चला सकता । गौरतलब है कि मंगलवार को ट्रैफिक चेकिंग के दौरान 17 वर्षीय नाहेल की हत्या का वीडियो भी सामने आया है । वीडियो में दो अधिकारी कार की खिड़की के पास खड़े दिख रहे हैं, जिनमें से एक ने चालक पर बंदूक तान रखी है । जैसे ही किशोर आगे बढ़ता है, अधिकारी ने गोली चला दी । इस घटना में देश को झकझोर कर रख दिया है और लोग काफी आक्रोशित हैं ।

फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों हुए परेशान, दंगे रोकने नहीं सूझ रहा कोई उपाय

पेरिस (एजेंसी) । फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों देश में भड़क रहे दंगों से परेशान हो रहे हैं । उन्हें दंगों से निपटने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है । गौरतलब है कि फ्रांस में पुलिस के हाथों एक किशोर की हत्या के बाद से भड़के दंगे विकराल रूप ले चुके हैं । ये दंगे राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के लिए एक बहुत अनचाहे और खतरनाक संकेत के तौर पर सामने आए हैं । मैक्रों ने अपने विवादास्पद पेंशन सुधार पर आधे साल तक चले विरोध प्रदर्शन पर आखिरकार किसी तरह से काबू पाया था । जो इस साल के अधिकांश समय फ्रांस के घरेलू एजेंडे पर हावी रहा था । उसी समय ताजा हिंसा भड़क उठी । देश भर की दुकानों में तोड़फोड़ और जलाई गई बसों की तस्वीरें भी मैक्रों की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने वाली साबित हुई हैं । मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ये दंगे खासकर ऐसे समय में भड़के हैं, जब मैक्रों यूक्रेन पर रूसी हमले को खत्म करने में बड़ी भूमिका निभाना चाहते हैं । वह

यूरोप के नंबर एक पावरब्रॉकर के रूप में देखे जाने इच्छा रखते हैं । राष्ट्रपति मैक्रों को दंगों के कारण जर्मनी की अपनी राजकीय यात्रा रद्द करनी पड़ी थी । जो इस हफ्ते के अंत में शुरू होने वाली थी और यह 23 साल में किसी फ्रांसीसी राष्ट्रपति की पहली ऐसी यात्रा थी । इससे पहले भी पेंशन सुधार कानून के हिंसक विरोध के कारण मैक्रों ने इस साल की शुरुआत में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स तृतीय की राजकीय यात्रा को स्थगित कर दिया था । जो कि सम्राट के रूप में उनकी पहली विदेश यात्रा होती । राजनीतिक विरोधों का बाना है कि ये दंगा राष्ट्रपति के लिए बहुत बुरी खबर है, जो सरकार को फिर से पुष्टि करने और पेंशन संकट से आगे बढ़ने के लिए कैबिनेट फेरबदल के साथ तृतीयों में सरकार को एक सुचारु ढंग से चलाने की उम्मीद कर रहे थे । दुनिया में लोग यह देखकर अचरज में हैं कि कैसे फ्रांस एक के बाद एक तनाव, हिंसा और संकटों का सामना कर रहा है ।

नेपाल की मौजूदा गठबंधन सरकार पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी : प्रधानमंत्री प्रचंड

काठमांडू (एजेंसी) । नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' ने शनिवार को कहा कि देश की वर्तमान गठबंधन सरकार 'अनुकूलतम संभव' के आधार पर अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी । गौरतलब है कि 26 दिसंबर, 2022 को प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले प्रचंड फिलहाल नेपाल में 10 दलों की गठबंधन सरकार चला रहे हैं । प्रधानमंत्री कार्यालय के सूत्रों ने बताया कि काठमांडू से करीब 200 किलोमीटर दूर पोखरा में पत्रकारों से बातचीत में नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी-मध्य) (सीपीएन-एमसी) के 68 वर्षीय नेता ने कहा, 'गठबंधन सरकार पांच साल चलेगी और हम अनुकूलतम सहमत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं ।'

प्रचंड का यह बयान इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि 1990 के दशक में देश में लोकतंत्र की स्थापना के बाद से अभी तक कोई सरकार अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी है । प्रचंड ने अपनी हालिया भारत यात्रा को ऐतिहासिक बताया और कहा, 'सीमा मुद्दे को सुलझाने के संबंध में भारतीय प्रधानमंत्री की घोषणा महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इससे पहले भारत के किसी प्रधानमंत्री ने ऐसा नहीं कहा है ।' गौरतलब है कि नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड के साथ पिछले महीने विस्तृत बातचीत के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि ऐसे में जबकि दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों को हिमालय की ऊंचाई पर पहुंचाना चाहते हैं, वे सीमाओं से जुड़े मुद्दे सहित सभी मुद्दों को सुलझाएंगे ।



नेतान्याहू के कार्यालय का कहना है कि चीन की ये प्रस्तावित यात्रा बतौर प्रधानमंत्री उनकी चौथी यात्रा होगी । उनका कहना है कि इस न्यूट्रे के संबंध में अमेरिका के बाइडेन प्रशासन को पिछले महीने ही सूचित कर दिया था । प्रधानमंत्री कार्यालय ने यात्रा की संभावित तारीख के संबंध में टिप्पणी करने से मना कर दिया है । पूर्व सैन्य खुफिया प्रमुख और अब राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन संस्थान के प्रमुख मेजर जनरल तामोर हेमैन

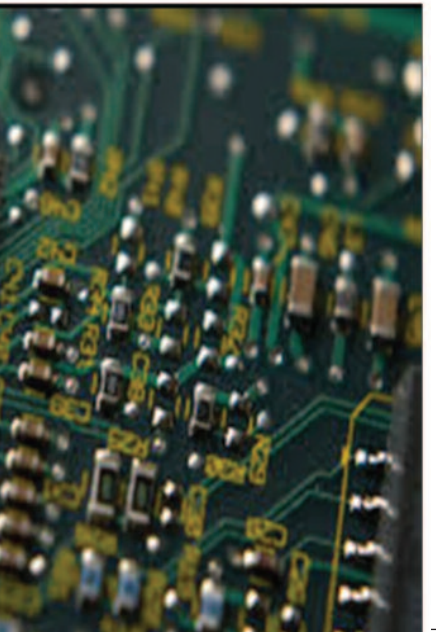
27 जून को ट्वीट कर कहा कि वाशिंगटन यात्रा से पहले चीन की यात्रा कामना करना एक बड़ी गलती है । हेमैन के आकलन के अनुसार, नेतान्याहू की चीन यात्रा से क्लाइंट हाउस में हृदय परिवर्तन नहीं होगा । वास्तव में, उन्होंने चेतावनी दी, इसका विपरीत प्रभाव हो सकता है । हेमैन ने लिखा कि अमेरिकी तथ्यांकथित विविधोकरण प्रवृत्त पर विशेष रूप से क्रोधित हैं और संकेत देते हैं कि इजराइल को अपने सहयोगियों में विश्वता लानी चाहिए और केवल वाशिंगटन पर निर्भर नहीं रहना चाहिए । वैश्विक आधिपत्य के लिए अमेरिका और चीन के बीच भीषण संघर्ष के बीच, यह इजरायल-अमेरिका गठबंधन को रणनीतिक नुकसान प्रभावित करेगा । एक साक्षात्कार में पूर्व न्याय मंत्री सूचित कर दिया था । प्रधानमंत्री कार्यालय ने यात्रा की संभावित तारीख के संबंध में टिप्पणी करने से मना कर दिया है ।

ताइवान की प्रमुख कंपनियां अपने उत्पादन केंद्र भारत में लाना चाहती हैं: नीति निर्माता

वाशिंगटन (एजेंसी) । चीन के साथ ताइवान के बढ़ते तनाव के बीच इस स्वशासित द्वीप के शीघ्र नीति निर्माताओं ने कहा है कि प्रमुख ताइवानी प्रौद्योगिकी कंपनियां अपना जोखिम कम करने के लिए अपने विनिर्माण केंद्रों को भारत में स्थानांतरित करने पर विचार कर रही हैं । ताइवान के राष्ट्रीय विकास उप मंत्री काओ शिएन-क्यू ने कहा कि सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों के विनिर्माण सहित उभरती और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में नई दिल्ली और ताइपे के बीच सहयोग की बहुत अधिक गुंजाइश है । उन्होंने अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों के एक समूह के साथ बातचीत में कहा कि ताइवान की प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियां अपनी वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए भारत को एक प्रमुख गंतव्य के रूप में देख रही हैं । चूंकि-हुआ इंस्टीट्यूशन ऑफ इंफोर्माटिक रिसर्च में स्थित प्रमुख थिंक-टैंक ताइवान आसियान अध्ययन केंद्र की निदेशक क्रिस्टी त्सुन-त्सु ने भारत को ताइवान के

लिए एक महत्वपूर्ण देश बताया । उन्होंने कहा कि चीन में काम करने वाली ताइवानी कंपनियां अपने स्थानीय ग्राहकों को बनाए रखते हुए भारत में आपूर्ति श्रृंखला को स्थापना करना चाह रही हैं । बीजिंग के साथ वाशिंगटन के व्यापार विवाद और ताइवान के आसपास चीनी सेना की बढ़ती मौजूदगी के कारण प्रमुख ताइवानी कंपनियां अपने उत्पादन केंद्रों को चीन से यूरोप, अमेरिका और भारत जैसे देशों में स्थानांतरित करने पर विचार कर रही हैं । भारत दुनिया के सबसे बड़े चिप कि विनिर्माता ताइवान सेमीकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग कॉर्पोरेशन (टीएसएमसी) सहित प्रमुख ताइवानी चिप उत्पादकों की अपने यहां लाने का इच्छुक है । टीएसएमसी के ग्राहकों में एप्पल भी शामिल है । शिएन-क्यू ने कहा, मुझे यकीन है कि सेमीकंडक्टर और सूचना तथा संचार उद्योग के क्षेत्र में दोनों पक्षों के बीच सहयोग बढ़ेगा । जानकारी के मुताबिक बड़ी संख्या में ताइवानी कंपनियां भारत में दो

औद्योगिक पार्कों में उत्पादन केंद्र स्थापित करने जा रही हैं । इन पार्कों को विशेष रूप से ताइवानी कंपनियों के लिए तैयार किया जा रहा है । त्सुन-त्सु ने कहा, यह केवल व्यापार के बारे में नहीं है । इसका संबंध रणनीतिक सहयोग से अधिक है । हमारी कंपनियां अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध की शुरुआत से पहले ही भारत जाने पर विचार कर रही थीं, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था इतनी बड़ी है कि यह ताइवान को बदलाव के लिए कुछ अवसर दे सकती है । उन्होंने कहा कि ताइवान सरकार भारत के साथ व्यापार समझौते पर बातचीत करने की कोशिश कर रही है । ताइवान स्थित फॉक्सकॉन ने तमिलनाडु में एक आईफोन निर्माण संयंत्र स्थापित किया है और कंपनी अब कर्नाटक में एक और आईफोन उत्पादन संयंत्र स्थापित कर रही है । भारत और ताइवान के बीच द्विपक्षीय व्यापार तेजी से बढ़ रहा है और यह 2006 में दो अरब डॉलर से बढ़कर 2021 में 8.9 अरब डॉलर हो गया ।



दर्री डैम एवं पाली क्षेत्र में हुए सड़क दुर्घटना में पांच लोगों की गई जान

सांसद ने घटना स्थल पहुंच मृत व्यक्तियों के प्रति व्यक्त की संवेदना

-संवाददाता-
कोरबा, 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। कोरबा जिले में बढ़ते सड़क हादसों से हर दिन किसी न किसी घर में मातम पसर रहा है। शनिवार-रविवार की मध्य रात्रि लगभग 1:30 से 2 बजे के बीच हुए सड़क हादसे में शहर के 3 युवाओं की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं रविवार तड़के दो ट्रेलर की सीधी टक्कर में दोनों ट्रेलर के चालक की मौत हो गई। रविवार हुए दोनो घटनाओं से पांच लोगों की जान चली गई। जिले में दर्री कोरबा मार्ग में भवानी मंदिर के निकट यह हादसा हुआ। बताया जा रहा है कि कार में सवार तीन युवक दर्री से बर्थडे पार्टी मनाकर वापस घर लौट रहे थे। दर्री हसदेव बराज पर पुराने पुल के समानान्तर नवनिर्मित पुल से गुजरने के दौरान इनकी कार क्रमिक सीजी 11 बीएच 7788 सड़क पर बैठे मवेशी से बचने के चक्कर में मवेशी से टकराते हुए अतिव्यभिक्त होकर सामने से आ रहे माल वाहक हाईवा



से जा टकराई। इस भीषण टक्कर में तेज रफ्तार कार के परखच्चे उड़ गए। कार की हालत देखकर ही दुर्घटना की भयावहता का अंदाजा लगाया जा सकता है। जिसने भी इस

गोयल पिता मनोज अग्रवाल 28 वर्ष निवासी एसएस ग्रीन कोरबा, दीपक सिंह पिता सदानंद सिंह 22 वर्ष निवासी राताखार, रुपेश गोयल पिता श्याम गोयल 28 वर्ष निवासी डीडीएम रोड कोरबा की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक पवन भोग आटा, डीडीएम रोड और दर्री जमनीपाली में संचालित दुग हाउस दवा विक्रेता परिवार से हैं। घटना की जानकारी होने से शहर में शोक मिश्रित सनसनी व्याप्त है। पुलिस द्वारा वैधानिक कार्यवाही व पोस्टमार्टम के पश्चात शवों को परिजनों के सुपुर्द किया गया है। लोकप्रिय सांसद श्रीमती ज्योत्सना चरणदास महंत को अलसुबह जैसे ही इस दुर्घटना की जानकारी मिली, वह पार्टी के वरिष्ठ महिला पदाधिकारियों के साथ दुर्घटना स्थल पहुंचीं। उन्होंने अधिकारियों से दुर्घटना के संबंध में जानकारी लेते हुए इस हादसे में मृत युवकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए उनके परिजनों को बंडस बांधने के

लिए भगवान से प्रार्थना की। उन्होंने सड़क हादसों पर नियंत्रण के लिए प्रभावी और ठोस कार्य किए जाने की बात कही है। वहीं पाली थाना क्षेत्र अंतर्गत पाली - बिलासपुर मुख्य मार्ग पर एसईसीएल के सराईपाली परियोजना बुड्बुड खदान गेट के समीप रविवार तड़के ट्रेलर क्रमिक सीजी 14 डी 1474 और सीजी 10 बीएच 6783 में टक्कर हो गई। दोनों ट्रेलर के चालक केबिन में ही फंस गए। आनन-फानन में पाली पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची तब तक दोनों गंभीर घायल अवस्था में पड़े रहे। टक्कर इतनी भीषण थी कि केबिन चिपक गए थे। केबिन को काटकर दोनों वाहनों के चालकों को बाहर निकाला जा सका, लेकिन दोनों की सांस थम चुकी थी। बता दें कठघोरा से पाली और बिलासपुर फोरलेन का कार्य में कुछ स्थानों पर अभी भी काम चल रहा है। ऐसे में एक ही सड़क पर आवाजाही की वजह से यह हादसा हुआ है।

चाणक्य एकेडमी कोचिंग संस्था से 3 बच्चों का जवाहर नवोदय में चयन



-संवाददाता-
वाइफनगर 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। जून के अंतिम सप्ताह में जवाहर नवोदय विद्यालय में कक्षा छठवीं में प्रवेश हेतु होने वाले प्रवेश परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। जिसमें चाणक्य एकेडमी वाइफनगर और सुलसुली कोचिंग संस्थान से 3 विद्यार्थियों का चयन हुआ। जिसमें अस्तित्व राज आर्यन, शौर्य यादव एवम ज्योति सिंह हैं। एक ही कोचिंग संस्थान से 3 विद्यार्थियों का चयन होना काफी हर्ष उल्लास का विषय है। बता दें कि चाणक्य एकेडमी कोचिंग शिक्षण संस्थान विगत 7 वर्षों से वाइफनगर एवं सुलसुली में सेवाएं दे रहा है एवं शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयत्नशील है। इस अवसर पर समस्त ग्राम वासियों ने कोचिंग संस्थान के शिक्षक पंकज कुमार चौधरी एवं सुधीर कुमार चौधरी को हार्दिक बधाइयां एवं शुभकामनाएं दी तथा चयनित विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बातचीत के दौरान चाणक्य एकेडमी वाइफनगर के संचालक आकाश तिवारी ने बताया कि हमारे सेंटर से साल 2022 में 4 बच्चे नवोदय के लिए तथा 11 बच्चे सैनिक स्कूल के लिए पास हुए थे। साल 2021 में 6 बच्चे जवाहर नवोदय के लिए तथा 2 बच्चे सैनिक स्कूल के लिए चयनित हुए थे। उन्होंने बताया कि 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम 95 प्रतिशत तक जाता है संस्थान का उद्देश्य समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जवाहर नवोदय विद्यालय, सैनिक विद्यालय सहित 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षा इत्यादि की तैयारी कराना है। साथ ही ग्रामीण अंचल में जो विद्यार्थी आर्थिक रूप से सशक्त ना हो किंतु प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने की इच्छुक हो ऐसे विद्यार्थियों के लिए हमारा कोचिंग संस्थान मुफ्त में शैक्षणिक कार्य कराएगा। साथ ही नवोदय विद्यालय एवं सैनिक विद्यालय में चयनित समस्त समस्त चयनित विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि पर हार्दिक बधाइयां दी एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की घ उन्होंने कोचिंग संस्थान के शिक्षक पंकज कुमार चौधरी एवं सुधीर कुमार चौधरी के इस उपलब्धि पर सराहना की।

एसईसीएल कॉलोनीयों की समस्या जानने आज दौरे पर निकलेंगे राजस्व मंत्री

- » कोरबा विधानसभा क्षेत्र के कार्यकर्ता भी रहेंगे साथ में,
- » निगम एवं एसईसीएल के अधिकारियों को समय पर उपस्थित रहने के निर्देश



-संवाददाता-
कोरबा, 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। एसईसीएल कॉलोनीयों में आये दिन मिल रही समस्याओं को देखते हुए आज राजस्व मंत्री स्वयं निरीक्षण करने विभिन्न कॉलोनीयों का दौरा करेंगे। कोरबा विधानसभा क्षेत्र में आने वाली एसईसीएल की आवासीय कॉलोनीयों में बिजली, पानी, सड़क, नाली एवं साफ-सफाई जैसी मूलभूत सुविधाओं को लेकर यहां के रहवासियों द्वारा लगातार शिकायतें मिल रही हैं। पहले भी समय-समय पर इन समस्याओं को दूर करने एसईसीएल प्रबंधन को अवगत कराया गया लेकिन एसईसीएल प्रबंधन व्याप्त समस्याओं को दूर करने के लिए समोचित उपाय नहीं किया और कर्मियों की सुविधाओं पर ध्यान नहीं दिया। कॉलोनीयों के कई घरों की छत गिरने की भी खबर मिलती रही और कॉलोनीवासियों में सुरक्षा के प्रति दहशत का माहौल व्याप्त हो गया है। इन सब समस्याओं को करीब से

27 के एबीएस आवासीय कॉलोनी वाली से मिलकर वहां की समस्या से अवगत होंगे। यहां से वार्ड क्र. 30 मानिकपुर जाते समय रास्ते में विद्युत वितरण विभाग द्वारा स्थापित विद्युत सब स्टेशन का अवलोकन करेंगे। दोपहर 12.00 बजे वार्ड क्र. 14 पम्प हाउस में संचालित फिल्टर प्लांट का निरीक्षण करेंगे फिर वार्ड क्र. 13 के कुरती मैदान के सामने एसईसीएल आवासीय परिसर पहुंच कर लोगों की समस्या से अवगत होंगे। दोपहर 01.00 बजे वार्ड क्र. 59 कुसमुण्ड वैशाली नगर का भ्रमण करेंगे और वार्डवासियों से भेंट मुलाकात कर दोपहर 01.30 बजे बल्गी पहुंचकर वहां की कॉलोनी में रह रहे लोगों की समस्या से अवगत होंगे। इन सभी स्थानों पर एसईसीएल के अधिकारियों एवं नगर निगम के जोन अधिकारियों को समय पर मंत्री श्री अग्रवाल के साथ उपस्थित रहने का निर्देश दिया गया है। निज सहायक सुरेश कुमार अग्रवाल ने कोरबा विधानसभा क्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधियों, कांग्रेस पदाधिकारियों, जोन, वार्ड एवं बुध पदाधिकारियों को भी समय पर उपस्थित होने एवं कांग्रेस कार्यालय से साथ में चलने के लिए आग्रह किया गया है।



पिंकी बनी कुशल उद्यमी, रेडीमेड क्लॉथ स्टिचिंग इकाई से कर रही कमाई

-संवाददाता-
मनंदरगढ़, 02 जून 2023 (घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ के मुखिया भूपेश बघेल के ड्रीम प्रोजेक्ट रीपा से जुड़कर युवा, महिलाएं और उद्यमी आर्य अर्जित कर आत्मनिर्भर बन रहे हैं। कलेक्टर नरेंद्र कुमार दुगा के निर्देशन और जिला सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में जूले के चिह्नकित रीपा में आजीविका मूलक गतिविधियां संचालित की जा रही है। दूरस्थ वनांचल और आदिवासी बाहुल्य विकासखंड भरतपुर के जनकपुर में शासन के निर्देशानुसार रीपा का संचालन किया जा रहा है। रीपा से जुड़कर समूह की महिलाएं विभिन्न स्व-रोजगार कर रही हैं। समूह की सदस्य श्रीमती पिंकी बाधवानी ग्रामीण अंचल में अपने परिवार के साथ रहकर सीमित साधनों के साथ अपने जीवन निर्वहन कर रही थीं। समूह की महिलाओं के साथ कुछ नया कर गुजरने की चाह लिए अवसर की तलाश में रीपा योजनांतगत ग्राम - जनकपुर में रेडीमेड क्लॉथ स्टिचिंग इकाई स्थापित कर गईं, जिससे वर्तमान में उनके साथ 06 महिला उद्यमियां प्रशिक्षण प्राप्त कर कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा अब तक लगभग 250 पेटिकोट की बिक्री करके 24 हजार 500 रुपये का आय अर्जित किया गया है। समूह में दीदीयां क्लॉथ स्टिचिंग इकाई का सफल संचालन कर अच्छी आय अर्जित कर रही हैं। उनकी सिलाई से प्रभावित होकर उन्हें ऑनलाइन और स्कूल के ड्रेस बनाने का आइड मिली है। इस योजना ने ग्रामीण महिलाओं को सीधे तौर पर रोजगार उपलब्ध कराया है, साथ ही उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त होकर आत्मनिर्भर बनने की राह में अग्रसर किया है।

आत्महत्या के लिए उत्प्रेरित करने के मामले में 2 आरोपियों को किया गया गिरफ्तार

-संवाददाता-
सूरजपुर, 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। सूरजपुर के आदित्य होटल में हंसराज उर्फ हंसू अग्रवाल निवासी नेहरू पार्क रोड सूरजपुर के द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या करने की सूचना पर मंग कायमी उपरान्त शव पंचनामा व जांच कार्यवाही के दौरान मृतक के परिजनों एवं गवाहों के कथन लिए गए जिसमें आरोपियों से मृतक हंसराज उर्फ हंसू अग्रवाल के द्वारा अपना पैसा वापस मांगने पर उनके द्वारा मृतक हंसराज अग्रवाल को गाली गलौज कर जान से मारने धमकी देकर आत्महत्या करने के लिये उत्प्रेरित किया गया एवं मृतक हंसराज उर्फ हंसू अग्रवाल के द्वारा एक कापी में मृत्यु पूर्व सुसाइड नोट 5 पेज में लिखा हुआ मिला जिसमें आरोपी 1. दिलीप अंदानी पिता मोहन अंदानी निवासी तेलीबाधा रायपुर 2. नवीन बतरा निवासी रायपुर 70 लाख रुपये अलग अलग किस्तों में महादेव बुक का काम दिलाने के नाम पर ठगी करने 3. अरुण सिंह निवासी रायपुर 4. पूजा पाण्डेय निवासी झांसी सूरजपुर हालमुकाम रायपुर 5. रवि अग्रवाल निवासी अम्बिकापुर के द्वारा मृतक का नुकसान पैसा कवर करने के लिये 25 लाख रुपये लेने 6. लिखे निवासी सूरजपुर के द्वारा मृतक से 20 से 25 लाख रुपये लेकर धोखा देने और मृतक द्वारा उमरे पैसा वापस मांगने पर जान से मारने की धमकी देकर आत्महत्या करने को



उत्प्रेरित करने से मृतक सूरजपुर के आदित्य होटल में फांसी लगाकर आत्महत्या करना पाये जाने पर आरोपियों के विरुद्ध थाना सूरजपुर में अपराध क्रमांक 271/23 धारा 306, 34 भादस के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया। पुलिस महानिरीक्षक, सूरजपुर रेंज रामगोपाल गर्ग के सतत मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री आई. कल्याण ऐलिसैला ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीम गठित कर लगाया और लगातार विवेचना से जुड़े महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए। गठित पुलिस टीम के द्वारा रायपुर में दबिश देकर आरोपी दिलीप अंदानी पिता मोहन अंदानी



नीलाम्बर को अनुसूचित जनजाति वर्ग स्मॉल बिजनेस योजना का मिला लाभ

-संवाददाता-
जशपुर, 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति जशपुर अंतर्गत अनुसूचित जनजाति वर्ग के हितार्थियों को विभिन्न योजनाओं में प्रोत्साहन लाभ दिया जा रहा है। ताकि अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों का सामाजिक, आर्थिक स्तर को सुदृढ़ किया जा सके और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। इसी उद्देश्य से पथलगांव विकासखण्ड के ग्राम तमतला निवासी श्री नीलाम्बर सिदार को अनुसूचित जनजाति वर्ग स्मॉल बिजनेस सीएचसी-256 के तहत लाभान्वित किया गया है। जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति से प्राप्त जानकारी के अनुसार अनुसूचित जनजाति स्मॉल बिजनेस योजना के तहत तमतला निवासी श्री नीलाम्बर सिदार लाभान्वित किया गया है और उन्हें योजना के तहत व्यवसाय के लिए वर्ष 2022-23 में 3 लाख रूपए की स्वीकृति दी गई है। हितार्थी श्री सिदार ने स्मॉल बिजनेस योजना के तहत इकाई लागत 3 लाख से बटू हळुसा व्यवसाय कर रहा है। व्यवसाय से उन्हें अब 15 से 20 हजार तक प्रतिमाह आय हो रहा है। पूर्व में नीलाम्बर कृषि कार्य करता था। जिससे उन्हें घर परिवार चलाने में परेशानी होती थी। बूट हाऊस व्यवसाय से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो रही है जिससे उनके आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और अब वे अपने परिवार का पालन-पोषण अच्छे ढंग से कर पा रहे हैं। योजना का लाभ देने के लिए उन्होंने छत्तीसगढ़ शासन और जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया है।

जिले में डॉक्टर एसोसिएशन का हुआ गठन, शुभम सिंह बने जिला अध्यक्ष



-संवाददाता-
सूरजपुर, 02 जुलाई 2023
(घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ इन सर्विस डॉक्टर एसोसिएशन सूरजपुर का गठन जिला मुख्यालय के होटल आदित्य में संपन्न हुआ। डॉक्टर डे के उपलक्ष्य में प्रथम प्रांतीय सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आर सिंह ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देकर संगठन आजीविका मूलक गतिविधियों को बखूबी निभाने की बात कही, जिनमें मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आर एस सिंह सहित जिले के सभी डॉक्टर उपस्थित रहे, सर्व सहमति से जिला अध्यक्ष छत्तीसगढ़ इन सर्विस डॉक्टर एसोसिएशन के शुभम सिंह यादव को चुना गया, साथ ही डॉ स्विनल गुप्ता को उपाध्यक्ष सचिव डॉ हर्षवर्धन शर्मा उपसचिव लाल धुव डॉ. विद्याभूषण टोपो डॉ. तेरस कंवर डॉ. गरिमा सिंह डॉ. जे. एस. सरस्ता, डॉ. शुभम सिंह यादव डॉ. महामाया प्रताप सिंह डॉ. विकास गुप्ता डॉ. सुमित कुमार सोनी डॉ. स्विनल गुप्ता डॉ. रजनीश गौतम डॉ. प्रेम लाल साहू डॉ अजय कुमार डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा डॉ. मनोज साहू डॉ. चंद्रिका सिंह डॉ. अजीत दीवान डॉ. नेहा गुप्ता डॉ. शालू कुशवाहा डॉ. प्रियंका शर्मा डॉ. साधना सिंह डॉ. पुष्पा सिंह डॉ. वैशाली उपाध्याय प्रीति जैन डॉ. हर्षवर्धन शर्मा डॉ. प्रियंका पटेल डॉ. श्रीपाल सिंह डॉ. एस आर भागत डॉ. मुकेश कुमार डॉ. आशुतोष डॉ. डीके विश्वकर्मा डॉ. रमेश साहू सहित बड़ी संख्या में जिले का डॉक्टर उपस्थित रहे।



नीरज ने संकेत दिया कि अब 19 अगस्त से शुरू होने वाले बुडापेस्ट विश्व चैम्पियनशिप में भाग लेंगे

लुसाने, 02 जुलाई 2023। डायमंड लीग के लुसाने चरण में शीर्ष पर रहने वाले भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने संकेत दिया कि वह अब सीधे विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में प्रतिस्पर्धा करते हुए दिखेंगे जो 19 अगस्त से बुडापेस्ट में शुरू होगा। चोपड़ा इस दौरान किसी और प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लेंगे। चोट के कारण लगभग एक महीने तक खेल से दूर रहे चोपड़ा ने डायमंड लीग

के लुसाने चरण में शुक्रवार को 87.66 मीटर की दूरी के साथ लगातार दूसरी बार शीर्ष स्थान हासिल किया। उन्होंने मौजूदा सत्र में पांच मर्ड को दोहा में हुए शुरुआती डायमंड लीग में भी शीर्ष स्थान हासिल किया था। लुसाने में जीत दर्ज करने के बाद चोपड़ा ने कहा, "उन्होंने लुसाने को अपने लिए अच्छी किस्मत वाला शहर करार दिया। उन्होंने कहा, "लुसाने मेरे लिए हमेशा अच्छा रहा है। पिछले साल भी मैंने यहां जीत दर्ज की थी और इस साल भी ऐसा ही हुआ। इसलिए मैं अगले साल फिर से आने और फिर से जीतने की उम्मीद कर रहा हूं।" बुडापेस्ट विश्व चैम्पियनशिप का पुरुषों का भाला फेंक क्वालिफिकेशन राउंड 25 अगस्त को निर्धारित है। इसमें अभी 50 से अधिक दिन का समय है। चोपड़ा अगर उससे पहले किसी स्पर्धा में हिस्सा नहीं लेते हैं तो वह डायमंड लीग के दोहा और लुसाने चरणों जैसे सिर्फ दो बड़ी स्पर्धाओं में भाग लेने के बाद विश्व चैम्पियनशिप में जाएंगे। चोपड़ा ने अपनी अगली प्रतियोगिता के

रूप में स्पष्ट तरीके से विश्व चैम्पियनशिप का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया, लेकिन बुडापेस्ट में 19 से 27 सितंबर तक होने वाली चैम्पियनशिप से पहले डायमंड लीग का मोनाको चरण (21 जुलाई) के अलावा कोई बड़ा आयोजन नहीं है। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एफआईए) के एक शीर्ष अधिकारी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि चोपड़ा पिछले महीने मांसपेशियों में इस खिंचाव से पूरी तरह उबर गए हैं।

चोट के कारण उन्हें तीन शीर्ष स्पर्धाओं (विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर गोल्ड लेबल प्रतियोगिताओं) में भाग नहीं लिया था। इस अधिकारी ने कहा, "वह पूरी तरह से फिट है। मुझे लगता है कि वह (विश्व चैम्पियनशिप से पहले) प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगे। शायद, वह विश्व चैम्पियनशिप पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं।" चोपड़ा ने 2022 विश्व चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता था।

बार्सिलोना और आर्सेनल के पूर्व मिडफील्डर फाब्रेगास ने संन्यास लिया



लंदन, 02 जुलाई 2023। बार्सिलोना और स्पेन के पूर्व मिडफील्डर सेस्क फाब्रेगास ने 36 साल की उम्र में प्रतिस्पर्धी फुटबॉल को अलविदा कह दिया। फाब्रेगास ने 16 साल की उम्र में आर्सेनल की ओर से पदार्पण करने के लगभग 20 साल बाद फुटबॉल से संन्यास लिया। स्पेन की 2010 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य रहे फाब्रेगास ने टिवटर पर संन्यास लेने की घोषणा की। उन्होंने पिछले साल इटली की दूसरे डिविजन की टीम कोमो के साथ दो साल का करार किया था लेकिन इसके पूरा होने से पहले

ही संन्यास लेने का फैसला किया। फाब्रेगास ने कहा, "बेहद दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि खिलाड़ी के रूप में मेरे फुटबॉल करियर को अलविदा कहने का समय आ गया है।" बार्सिलोना की यूथ अकादमी से आर्सेनल के साथ जुड़ने के बाद फाब्रेगास लंदन के इस क्लब के सबसे युवा खिलाड़ी बने जब उन्होंने अक्टूबर 2003 में 16 साल 177 दिन की उम्र में लीग कप में टीम की ओर से पदार्पण किया। वह इसके बाद आर्सेनल के कप्तान भी बने लेकिन 2011 में बार्सिलोना लौट आए। दक्षिण

अफ्रीका में 2010 में विश्व कप के अलावा उनकी मौजूदगी वाली स्पेन की टीम ने 2008 और 2012 में लगातार दो यूरोपीय चैम्पियनशिप भी जीती। बार्सिलोना के साथ फाब्रेगास ने 2012-13 में स्पेनिस लीग खिताब जीता लेकिन एक साल बाद प्रीमियर लीग में चेलसी से जुड़ गए। उन्होंने चेलसी के साथ 2015 और 2017 में प्रीमियर लीग खिताब जीते। वह इसके बाद 2019 में फ्रांस के क्लब मोनाको का हिस्सा बने जिसके लिए उन्होंने 68 मैच खेले और फिर पिछले साल कोमो के साथ जुड़े।

विश्व चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों के लिए मनु, दिव्यांश और ऐश्वर्य टीम में



नई दिल्ली, 02 जुलाई 2023। ओलंपियन मनु भाकर, दिव्यांश सिंह पंवार और ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर आगामी आईएसएसएफ विश्व चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों के लिए चुनी गयी भारतीय निशानेबाजी टीम में शामिल रहे। हालांकि 2018 एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता और पूर्व युवा ओलंपिक चैम्पियन सौरभ चौधरी दो बड़े टूर्नामेंट के लिए घोषित टीम में जगह नहीं बना सके। देश में खेल की संचालन संस्था भारतीय राष्ट्रीय संघ

(एनआरआई) ने अगस्त में अजरबैजान के बाकु में होने वाली आगामी विश्व चैम्पियनशिप और सितंबर में चीन के हांगजोऊ में होने वाले एशियाई खेलों के लिए भारतीय राष्ट्रफाल और पिस्टल टीम की घोषणा की। शांतगन टीम की घोषणा पहले ही हो चुकी है। बाकु के लिए 22 सदस्यीय राष्ट्रफाल और पिस्टल रवाना होगी जिसमें 32 पेरिस ओलंपिक कोटे दाव पर लगे होंगे जबकि 21 सदस्यीय टीम हांगजोऊ जायेगी। मौजूदा पुरुष

10 मीटर एयर राष्ट्रफाल विश्व चैम्पियन रुद्राक्ष पाटिल को चयन मापदंड में पेरिस कोटा विजेता के आधार पर एशियाई खेलों की टीम में शामिल किया गया। हांगजोऊ के लिए आशी चौकसे ने महिला एयर राष्ट्रफाल टीम में लिलोसा सेन की जगह ली। वह महिला राष्ट्रफाल की दोनों स्पर्धाओं में हिस्सा लेगी क्योंकि शीर्ष तीन महिला एयर राष्ट्रफाल निशानेबाजों में से कोई भी श्री पाजिशंस (3पी) में जगह नहीं बना सकी।

एशियाई खेलों में पुरुष और महिला राष्ट्रफाल स्पर्धाओं में प्रत्येक में केवल पांच प्रतियोगियों को ही अनुमति दी जाती है। बाकी चयन रूफ ए राष्ट्रफाल और पिस्टल निशानेबाजों के लिए राष्ट्रीय चयन ट्रायल 5 और 6 के बाद की रैंकिंग के आधार पर हुआजे शुक्रवार को यहां डा कर्णों सिंह शूटिंग रेंज में खतम हुए। लंबी समय बाद भारतीय टीम में वापसी करने की कोशिश कर रहे चौधरी ट्रायल का हिस्सा थे, लेकिन जगह नहीं बना सके।

11 भाषाओं में रिलीज होगी हनुमान



तेलुगु फिल्म हनुमान का टीजर करीब 6 महीने पहले आया था। हनुमान से प्रेरित इस फिल्म की रिलीज तारीख का दर्शक इंतजार कर रहे थे। शनिवार को फिल्म की रिलीज तारीख की घोषणा कर दी है। घोषणा होते ही इसकी चर्चा सोशल मीडिया पर छा गई। शाशकल मीडिया पर छा गई। रिलीज डेट बताई। हनुमान अगले साल मकर सक्रांत के मौके पर दर्शकों के बीच आएगी। यह 12 जनवरी, 2024 को रिलीज होगी। हनुमान के किरदार और पौराणिक कहानियों

से प्रेरित यह एक सुपरहीरो फिल्म है। फिल्म हनुमान नाम के एक काल्पनिक किरदार की कहानी है। इसकी पृष्ठभूमि अंजनद्री नाम के गांव पर आधारित है। फिल्म 11 भाषाओं में रिलीज होगी। इस फिल्म के साथ निर्देशक प्रशांत वर्मा अपने सिनेमैटिक यूनियर्स की शुरुआत कर रहे हैं। फिल्म में तेजा सज्जा मुख्य भूमिका में हैं। उनके साथ अमृता अय्यर सक्रीन साझा करती नजर आएंगी। इनके अलावा वारा लक्ष्मी शरत कुमार, राज दीपक शेट्टी, विनय राय भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म वीएफएक्स से भरपूर होगी। इसका नमूना 6 महीने पहले आए फिल्म के टीजर में देखने को मिला था। पहले यह फिल्म इस साल के मध्य में

रिलीज होने वाली थी, लेकिन वीएफएक्स के काम को और समय देने के लिए इसे आगे बढ़ाया गया था। बता दें पहले प्रभास की फिल्म प्रोजेक्ट के भी अगले साल जनवरी में रिलीज होने वाली थी। हालांकि, इसकी रिलीज को आगे बढ़ा दिया गया है। प्रोजेक्ट के भी पौराणिक कहानी से प्रेरित साईस फिक्शन फिल्म है। इसमें प्रभास के साथ दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन और कमल हासन जैसे कलाकार नजर आएंगे। वीएफएक्स से भरपूर इस फिल्म को भारत की अब तक की सबसे महंगी फिल्म बताया जा रहा है।

साड़ी का पल्लू गिराकर नम्रता मल्ला ने कराया हुस्न का दीदार, हॉटनेस देख फैस का मचला दिल



करवाया है। अपनी लैमरस अदाओं से सबका दिल मचलने वाली एक्ट्रेस नम्रता मल्ला के हर एक लुक के लिए फैस बेताब रहते हैं। ओपन हेयर और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस ने अपने आउटलुक को कॉन्टी किया है। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी फोटोज पर लाइक्स और कॉमेंट्स करते नहीं थकते हैं। नम्रता मल्ला सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और इंस्टा पर उनकी फैन फॉलोइंग लिस्ट काफी लंबी है।

भोजपुरी एक्ट्रेस नम्रता मल्ला सोशल मीडिया पर अपने हुस्न का दीदार करवा के लोगों के बीच लाइमलाइट लुट लेती हैं। उनकी बोल्डनेस और हॉटनेस हमेशा इंटरनेट पर कहर बरपाए रहती हैं। फैंस उनकी हर एक किलर तस्वीरों के लिए बेताब रहते हैं। हाल ही में नम्रता मल्ला ने अपनी लेटेस्ट तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उन्होंने साड़ी का पल्लू गिरा कर एक से बढ़कर एक पोज दिए हैं। एक्ट्रेस नम्रता मल्ला ने हाल ही में अपने लेटेस्ट बोल्ड फोटोशूट की तस्वीरों से इंटरनेट का तापमान बढ़ा दिया है। इन तस्वीरों में उनका स्टायलिश अंदाज देखकर फैंस एक बार फिर से उनकी हॉटनेस के कायल हो गए हैं। नम्रता मल्ला ने साड़ी का पल्लू

सूर्या कर्ण से करेंगे बॉलीवुड में डेब्यू

तमिल सिनेमा के मशहूर अभिनेताओं में से एक सूर्या अपनी बेहतरीन अदाकारी के लिए जाने जाते हैं। अभिनेता को 2020 में आई फिल्म सोरारई पोटरु के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। इन दिनों सूर्या अपनी फिल्म कंगुवा की शूटिंग में व्यस्त चल रहे हैं तो अब खबर आ रही है कि अभिनेता बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले हैं। अभिनेता की निर्देशक राकेश अम्रकाश मेहरा से कर्ण के लिए बातचीत चल रही है।



सूत्र से मिली जानकारी के मुताबिक, सूर्या और मेहरा बीते कुछ समय से कर्ण के लिए बातचीत कर रहे हैं। दोनों की बातचीत सही दिशा में भी आगे बढ़ रही है। ऐसे में सूर्या मेहरा के इस दो भाग वाले महाकाव्य का हिस्सा बनने के लिए बेहद उत्साहित हैं। सूत्र के अनुसार, यह फिल्म महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित होगी, जिसमें सूर्या अपने करियर के सबसे जटिल किरदारों में से एक कर्ण की भूमिका निभाएंगे। सूत्र ने कहा, यह मेहरा का ड्रीम प्रोजेक्ट है और वह काफी समय से इस पर काम कर रहे हैं। निर्देशक और निर्माताओं का मानना है कि फिल्म भारत में बदलाव लाने की क्षमता रखती है क्योंकि आज तक किसी ने इतने जटिल नायक पर फिल्म नहीं बनाई है। सूत्र ने कहा, कर्ण के किरदार के लिए ऐसे अभिनेता की तलाश थी, जो एक से दूसरे क्षेत्र में आसानी से ढल जाए और सूर्या से बेहतर कौन हो सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, कर्ण पैन इंडिया फिल्म होगी, जिसे कई भाषाओं में रिलीज किया जाएगा और इसके 2024 में पलोर पर जाने की उम्मीद है। सूत्र के अनुसार, मेहरा ने फिल्म के लिए खका

पहले ही तैयार कर रखा है और अब इसे सही से अमल में लाने की देरी है। सूत्र ने कहा, मेहरा के साथ सूर्या कई बैठक कर चुके हैं और उनका मानना है कि कर्ण उनके लिए बॉलीवुड में शुरूआत करने के लिए सही साबित होगी। सूर्या के अलावा साथ में कई सितारे बॉलीवुड में डेब्यू के लिए तैयार हैं तो कुछ न बीते साल ही हिंदी सिनेमा में कदम रखा था। गुब्बास से रश्मिका मंदाना, लाइगर से विजय देवक्रोड और लाल सिंह चड्ढा से नागा चैतन्य पिछले साल डेब्यू कर चुके हैं तो अब नयनतारा जवान में शाहरुख खान के साथ नजर आएंगी। इसके अलावा जूनियर एनटीआर के वर 2 में और अहू अर्जुन के इमर्गल अश्वथामा का हिस्सा बनने को खबरें आ रही हैं। सूर्या की शिव द्वाय निर्देशित पैन इंडिया फिल्म कंगुवा एक्शन से भरपूर है, जो 2024 में आएगी। इसके बाद अभिनेता सुधा कोगरा की अगली फिल्म में नजर आएंगे। इन दोनों फिल्म के पूरा होने के बाद ही वह कर्ण की शूटिंग शुरू करेंगे।

सामंथा रुथ प्रभु ने सिटाडेल के लिए बढ़ाई अपनी फीस, ले रही 10 करोड़ रुपये?

प्रियंका चोपड़ा की सिटाडेल आने के बाद से ही प्रशांसक इसके हिंदी संस्करण के इंतजार में हैं, जिसमें सामंथा रुथ प्रभु और वरुण धवन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इस सीरीज को लेकर आए दिन नई जानकारी सामने आती रहती है और अब सामंथा की फीस को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। दरअसल, कहा जा रहा है कि अभिनेत्री ने सिटाडेल के लिए अपनी फीस बढ़ाकर 10 करोड़ रुपये कर दी है। हालांकि, अभी इसकी पुष्टि नहीं हुई है। रिपोर्ट के अनुसार, राज और डीके के निर्देशन में बन रही सिटाडेल के लिए सामंथा 10 करोड़ रुपये ले रही हैं। ज्ञात हो कि इससे पहले अभिनेत्री राज और डीके की ही वेब सीरीज द फैमिली मैन 2 में नजर आई थीं, जिसके लिए उन्हें 2-3 करोड़ रुपये मिलने की बात सामने आई थी। ऐसे में अब अभिनेत्री ने अपनी फीस में तकरीबन 8 करोड़ रुपये की वृद्धि कर दी है। सिटाडेल का हिंदी संस्करण रूसो ब्रदर्स द्वारा निर्देशित वेब सीरीज सिटाडेल का स्पिन-ऑफ

है, जिसमें प्रियंका और रिचर्ड मैडेन मुख्य भूमिका में नजर आए हैं। हाल ही में इस सीरीज ने अमेजन प्राइम वीडियो पर दस्तक दी है, वहीं कहा जा रहा है कि हिंदी संस्करण में 80 और 90 का दशक दिखाया जाएगा। सीरीज में वरुण और सामंथा के साथ सिकंदर खेर भी मुख्य भूमिका में होंगे और इसमें जबरदस्त एक्शन भी देखने को मिलेगा। सामंथा सिटाडेल के बाद ब्रेक नहीं लेकर अपनी हॉलीवुड का पारी शुरू करने जा रही हैं। खबर है कि वह चेन्नई स्टोरी से हॉलीवुड डेब्यू करेंगी। इस फिल्म का निर्देशन बापटो में नामांकन पा चुके निर्देशक फिलिप जॉन करेंगे और भारतीय मूल के इंग्लिश एक्टर विवेक कालरा इसका हिस्सा होंगे। कहा जा रहा है कि यह रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म होगी, जिसमें सामंथा जापूस और निवेक दक्षिण एशियाई वेल्लैमैन का किरदार निभाएंगे, जो अपने पिता को खोजने के लिए, उनसे मदद लेगा। सामंथा आखिरी बार फिल्म शाकुंतलम में दिखाई दी थीं, जो बॉक्स ऑफिस

पर कुछ खास कमाल नहीं कर पाई थी। अब वह जल्द ही विजय देवक्रोड के साथ पैन इंडिया फिल्म कूशी में नजर आएंगी, जो 1 सितंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगा। इसके अलावा उन्होंने दिनेश विजान के साथ एक हॉरर-कॉमेडी फिल्म के लिए हाथ मिलाया है, वहीं वह अनुष्का शर्मा के साथ एक महिला केंद्रित फिल्म का भी हिस्सा हैं।

कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की फिल्म सत्यप्रेम की कथा ने रिलीज होते ही बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा दिया है। इंद के मौके पर रिलीज हुई इस फिल्म ने पहले दिन आते ही आदिपुरुष का खेल खत्म कर दिया तो जरा हटके जरा बचके अभी भी सिनेमाघरों में बनी हुई है। इसी तरह गुरुवार को रिलीज हुई पंजाबी फिल्म कैरी ऑन ज़ुड़ 3 ने भी अच्छी शुरुआत की है। आइए जानते हैं किस फिल्म ने कितनी कमाई की है। सत्यप्रेम की कथा एक रोमांटिक ड्रामा फिल्म है, जिसमें कार्तिक और कियारा की जोड़ी दूसरी बार साथ नजर आई है। फिल्म ने पहले दिन 9.25 करोड़ रुपये के साथ शुरुआत की थी तो अब दूसरी दिन इसकी कमाई में थोड़ी कमी आई है, लेकिन फिर भी इसका प्रदर्शन अच्छा है। रिपोर्ट के अनुसार, शुक्रवार को फिल्म 7.19 करोड़ रुपये कमाए हैं और इसकी कुल कमाई 16.44 करोड़ रुपये हो गई है, वहीं अब वीकेड पर कमाई बढ़ने की उम्मीद है। विक्की कोशल और सारा अली खान की जरा हटके जरा बचके रिलीज के बाद से ही अच्छा

सत्यप्रेम की कथा का दूसरे दिन भी शानदार प्रदर्शन

प्रदर्शन कर रही है। फिल्म में दोनों की जोड़ी पहली बार साथ नजर आई है, जिसे दर्शकों ने पसंद किया है। फिल्म की रिलीज का यह चौथा हफ्ता है और यह अभी भी बॉक्स ऑफिस पर टिकी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म ने रिलीज के 29वें दिन 4.5 लाख रुपये कमाए हैं, जिसके बाद इसका कुल कलेक्शन 82.98 करोड़ हो गया है। छोटे पर्दे से अपने करियर की शुरुआत करने वाली अविगा गौर ने 1920: हॉर्स ऑफ द हार्ट से बॉलीवुड में डेब्यू किया है। यह विक्रम भट्ट की बेटी कृष्णा भट्ट के निर्देशन में बनी पहली फिल्म है।



कार्तिक आर्यन Kiarra Advani SATYA PREM KI KATHA OFFICIAL TRAILER

छत्तीसगढ़ के दौरे पर पहुंचे दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बिलासपुर में विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे

केजरीवाल ने कहा-हां मैं बांट रहा हूं रेवड़ी



बिलासपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) छत्तीसगढ़ के दौरे पर पहुंचे दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि, भगवान ने छत्तीसगढ़ को देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कोयला, लोहा हर खनिज संपदा है यहां। मगर एक कमी की, इमानदार नेता, इमानदार पार्टी नहीं दी। उन्होंने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ आज भ्रष्टाचार के नाम से जाना जाता है। भाजपा को मौका मिला तो उन्होंने लूटा, कांग्रेस वालों को मौका मिला तो उन्होंने लूटा। बता दें कि सीएम केजरीवाल रविवार को बिलासपुर में जनसभा को संबोधित कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ को नहीं मिला इमानदार नेता

साईंस कॉलेज मैदान में आयोजित जनसभा में केजरीवाल ने कहा कि, अगर छत्तीसगढ़ में इमानदार नेता होते तो 20 साल के भीतर एक एक आदमी अमीर बन जाता। गांव-गांव में अस्पताल और स्कूल खुल जाते। अगर भाजपा और कांग्रेस के नेता इमानदार होते तो आप की सभा में एक भी आदमी नहीं आता। पंजाब के सीएम के साथ पहुंचे केजरीवाल ने कहा कि, भगवंत मान ने एक साल में पंजाब में 24 घंटे बिजली कर दी। छत्तीसगढ़ में आठ घंटे बिजली कट रही है। यहां बिजली नहीं, सिर्फ बिल आता है।

छत्तीसगढ़ में भी दिल्ली की तरह मिलेगी 24 घंटे फ्री

मोदी जी के लोग तो खुद खा लेते हैं...

विजली:अरविंद केजरीवाल
उन्होंने इस दौरान कहा कि यदि छत्तीसगढ़ में आप की सरकार आती है तो प्रदेश में भी दिल्ली की तरह 24 घंटे फ्री में बिजली मिलेगी।
मैं मुफ्त की रेवड़ी बांट रहा, मोदी जी के लोग खुद खा जा रहे

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने कहा कि, मोदी बोलते हैं केजरीवाल फ्री की रेवड़ी बांट रहा है। हां मैं बांट रहा हूं, मोदी जी के लोग तो खुद खा लेते हैं। मैंने स्कूल, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाओं का

सफर मुफ्त किया। हर दिल्ली वाले के हाथ में सात रेवड़ी फ्री में रख दी। जनता को फ्री में बिजली दे दी। पूरी दिल्ली में शानदार स्कूल बना दिए। अच्छी और फ्री शिक्षा की व्यवस्था की। पूरी दिल्ली के लिए अच्छे और मुफ्त इलाज की व्यवस्था की। मोहल्ला क्लिनिक बनाए। बसों में महिलाओं का सफर फ्री किया। दिल्ली के बुजुर्गों को फ्री तीर्थयात्रा कराई जाती है।

दिल्ली में 12 लाख, पंजाब में 30 हजार बच्चों को रोजगार मिला
अरविंद केजरीवाल ने कहा कि, दिल्ली में बेरोजगार बच्चों को रोजगार दिया। उन्होंने दावा किया कि 12 लाख बच्चों को रोजगार मिला है। पंजाब में 30 हजार बच्चों को सरकारी नौकरी दी गई। पंजाब के सीएम भगवंत मान ने कहा, देश को सब कुछ मिला, लेकिन सरकार चलाने वाले नेता नहीं मिले। हम लोग इसी मकसद से छत्तीसगढ़ आए हैं। हमारे पास पैसा नहीं है, गुंडे नहीं हैं। ये झूठे वादे करते हैं और हम गारंटी देते हैं।

मानसून सत्र में सीएम खेल सकते हैं मास्टर स्ट्रोक

लखों को मिलेगी कई सौगात



रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) विधानसभा चुनाव 2023 को देखते हुए आने वाला मानसून सत्र सौगातों की झड़ी वाला रह सकता है। ऐसी खबरें आ रही हैं कि इस दौरान सीएम बघेल अपना मास्टर स्ट्रोक खेल सकते हैं। इस दौरान वह ऐसी योजना प्रदेस में लांच कर सकते हैं जिसका फायदा उन्हें विधानसभा चुनाव के साथ लोकसभा चुनाव में भी मिले। सूत्रों की मानें तो सीएम बघेल अगस्त से प्रति एलपीजी सिलेंडर 500 रुपए में देने की योजना शुरू कर सकते हैं। जो प्रदेश के 21 लाख कनेक्शन से जुड़े बड़े वोट बैंक को प्रभावित करेगा। विश्वसनीय सूत्रों की मानें तो सीएम बघेल ने खराब और बित्त विभाग और पेट्रो कंपनियों के अफसरों के साथ इस योजना पर होने वाले खर्च, वित्तीय प्रबंधन आदि पर चर्चा की है। अगर

सबकुछ सही रह तो वे बजट पर चर्चा के दौरान घोषणा कर 15 अगस्त से इस योजना को लागू कर सकते हैं। ऐसी भी संभावना है कि स्वतंत्रता दिवस के मौके पर वह इस सौगात की घोषणा करें। बता दें कि राजस्थान में 100 युनिट बिजली हल में लागू की गई। हिमाचल, कर्नाटक में सप्तासीन होने के बाद 500 रुपए में सिलेंडर दिया जा रहा है। कांग्रेस ने अपने 2018 के जनघोषणा पत्र में ग्रामीण परिवारों को साल में 4 सिलेंडर मुफ्त देने का वादा किया है। ऐसे में इसे चुनाव से पहले लागू करने की तैयारी है।

राज्य के 90 विधानसभा क्षेत्रों में हुए भेंट मुलाकात दौरे के दौरान सीएम बघेल महिलाओं से पीएम मोदी की उज्वला गैस योजना में मिल रहे सिलेंडर की जानकारी लेते रहे हैं। महिलाओं ने यही कहा कि महंगा इनाम है कि दूसरा रिफिल नहीं करावा पा रहे। मिली जानकारी के अनुसार समय 21 लाख गैस कनेक्शन हैं। इन्हें एक रिफिल आज की दर के मुताबिक 1175-1180 रुपए पड़ रहा है। राज्य की 500 रुपए में गैस सिलेंडर योजना आते ही हर रिफिल की कीमत 675-680 रुपए हो जाएगी। ये 500 रुपए सरकार पेट्रो कंपनियों को सीधे भुगतान करेगी। इस योजना में एपीएल, बीपीएल से परे सभी 21 लाख कनेक्शनधारियों को यह सस्किडी देने पर मंथन हुआ है। इसके मुताबिक हर माह 105 करोड़ और सालाना 1260 करोड़ का व्यय भार आंका गया है।

पुलिस इंस्पेक्टर की याचिका पर हाईकोर्ट ने सुनाया अहम फैसला

बिलासपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) बिलासपुर हाईकोर्ट ने एक अहम फैसला सुनाया है। जिसके तहत कोर्ट ने कहा है कि आपराधिक मामला और विभागीय जांच एक साथ नहीं किया जा सकता है। बिलासपुर के पुलिसकर्मी राजेंद्र यादव ने कोर्ट में याचिका दायर की थी। जिसकी सुनवाई में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने यह फैसला सुनाया है। पुलिस इंस्पेक्टर की याचिका पर कोर्ट ने मामले में विभागीय जांच पर स्टैट देकर याचिकाकर्ता को बड़ी राहत दी है। यह केस बिलासपुर के पुलिसकर्मी राजेंद्र यादव से जुड़ा हुआ है। वह गुर्ग में पुलिस इंस्पेक्टर के पद पर तैनात थे। इस दौरान उनकी झूठी के दौरान एक महिला ने शिकायत की थी। जिस पर अमलेश्वर थाने में एक आपराधिक

केस दर्ज किया गया था। जिस न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने चालान प्रस्तुत किया गया था। कोर्ट की कार्रवाई के दौरान ही उनके खिलाफ दुर्ग एसपी ने विभागीय जांच शुरू कर दी। इस डिपार्टमेंटल जांच से परेशान होकर इंस्पेक्टर राजेंद्र यादव ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। जिस पर फैसला आया है। इस केस में याचिकाकर्ता की तरफ से वकील ने हाईकोर्ट में दलील दी कि,

सुप्रीम कोर्ट द्वारा एमपील एन्थनी बनाम भारत गोल्ड माइन्स लिमिटेड और अन्य मामलों में यह सिद्धान्त लागू नहीं किया गया है। यदि किसी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ आपराधिक केस दर्ज किया गया है और संबंधित विभाग द्वारा समान आरोपों पर विभागीय जांच की कार्यवाही प्रारंभ कर दी जाती है। दोनों मामलों में अगर गवाह सेम है, तो ऐसी स्थिति में आपराधिक मामले में गवाहों का बयान सबसे पहले लिया जाना चाहिए। अगर विभागीय जांच कार्यवाही में सभी गवाह से सबूत और गवाही ले ली जाती है तो इससे कोर्ट में चल रहे मामले में असर पड़ेगा। यही वजह है कि हाईकोर्ट ने राजेंद्र यादव को राहत दी है। विभागीय जांच पर स्टैट लगा दिया गया है।

रायपुर से नवा रायपुर के बीच चलेगी मेमू ट्रेन

पीएम मोदी इस दिन दिखाएंगे हरी झंडी



रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) सात जुलाई से राजधानी के रेल यात्रियों को नई सुविधा मिलने जा रही है। ये सुविधा रायपुर से नवा रायपुर के बीच शुरू हो रही मेमू ट्रेन है। दरअसल, छत्तीसगढ़ दौरे पर आ रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्लेटफॉर्म नंबर एक से मेमू ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। इसके लिए रेलवे मंडल ने पूरी तैयारी कर ली है। मेमू सबसे पहले मंदिरहसौद और केंद्री के लिए चलाया होगा। बाकी स्टेशनों पर अभी नहीं रकेगी क्योंकि अटल नगर, उद्योग नगर, सीबीडी और मुक्तगंज का प्लेटफॉर्म अभी तक नहीं बन पाया है। इन चारों स्टेशनों का प्लेटफॉर्म बनने के बाद रेलवे यहां पर ट्रेन रोकेगा। केंद्री स्टेशन से यारी उतरकर मंत्रालय, पुलिस मुख्यालय सहित अन्य जगह आसानी से आ जा सकते हैं। रेलवे की कर्मशायल टीम ने यात्रियों की आवाजाही के सर्वे का काम पूरा कर लिया है। रेल अधिकारियों के अनुसार, रायपुर से केंद्री तक ट्रेन चलाना जरूरी हो गया है। रेलवे ने करोड़ों रुप खर्च कर पटरी तो बिछ दी है। ट्रेन के शुरू हो जाने से यात्रियों को नई सुविधा मिलेगी। नवा रायपुर में एनआरडीए की ओर से अटलनगर, उद्योग नगर, सीबीडी, मुक्तगंज और केंद्री रेलवे स्टेशन हैं। केंद्री रेलवे स्टेशन का निर्माण रेलवे ने पूरा कर लिया है।

बाकी चारों रेलवे स्टेशन का निर्माण एनआरडीए को करना है। एनआरडीए ने चारों स्टेशनों के निर्माण के लिए टेंडर जारी कर एजेंसी नियुक्त कर दी है। इसमें सीबीडी रेलवे स्टेशन का काम तेजी से चल रहा है। सीबीडी स्टेशन का काम छह माह के भीतर पूरा होने की उम्मीद है। वहीं बचे हुए तीनों स्टेशनों के निर्माण में करीब एक से डेढ़ साल का समय लगेगा। इसलिए रेलवे प्रशासन रायपुर से मेमू मंदिर हसौद और केंद्री तक ट्रेन तो चलाएगा, लेकिन इन स्टेशनों पर ट्रेन नहीं रोकेगा, क्योंकि प्लेटफॉर्म नहीं बना है।

अटल नगर रेलवे स्टेशन जंक्शन के रूप में होगा डेवलप
मंदिरहसौद से दो किमी दूर नवा रायपुर की ओर अटल नगर रेलवे स्टेशन बन रहा है। रायपुर जंक्शन से मंदिरहसौद तक जाकर जब ट्रेन नवा रायपुर की तरफ टर्न होगी। वर्तमान में

अमित शाह 5 जुलाई को रायपुर में लेंगे बड़ी बैठक



रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह पखवाड़ेभर भीतर दूसरी बार प्रदेश दौरे पर आ सकते हैं। कहा जा रहा है कि शाह का 5 तारीख को रायपुर आने का कार्यक्रम बन रहा है, और दिन भर पार्टी के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ बैठक लेने के बाद शाम में वापस चले जाएंगे। हालांकि प्रदेश कई प्रमुख नेताओं को शाह के प्रस्तावित दौरे

की जानकारी नहीं है। माथुर दिल्ली गए हैं, और 4 तारीख को वापस रायपुर आएंगे। वो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 7 तारीख को रायपुर और इससे पहले अमित शाह के दौरे की तैयारियों में अहम भूमिका निभा रहे हैं। कहा जा रहा है कि शाह की बैठक में चुनाव तैयारियों पर ही प्रमुख रूप से चर्चा होगी। आज-कल में शाह का दौरा कार्यक्रम जारी हो सकता है।

सविदा कर्मी आज से अनिश्चितकालीन आंदोलन पर

रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) छत्तीसगढ़ सर्व विभागीय सविदा कर्मचारी महासंघ का तीन जुलाई से अनिश्चितकालीन आंदोलन शुरू होने जा रहा है। आंदोलन में राज्यभर के 45 हजार सविदा कर्मचारियों के शामिल होने की बात कही जा रही है। सर्व विभागीय सविदा कर्मचारी

महासंघ की ओर से जारी बयान में अनिश्चितकालीन आंदोलन में स्वास्थ्य विभाग, मरनेगा सहित पंचायत विभाग, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, महिला एवम बाल विकास विभाग, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना व अन्य विभाग के सविदा कर्मचारी शामिल होने की बात कही गई है।

छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर में हुई फायरिंग!

गोली चलने से दहला परिवार, मचा हकंप

बिलासपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) न्यायधानी में सुबह-सुबह फायरिंग हो गई। थाने में इसकी शिकायत करते हुए पीड़ित युवक ने बताया है कि घर के बाहर खड़ी उनकी कार में कुछ युवक आये और फायरिंग कर भाग गए।

थाने में शिकायत करते हुए बताया है कि आज सुबह 7-30 बजे के आसपास दो युवक वैगनआर कार में उनके घर के पास आए। और घर के सामने खड़ी उनकी स्विफ्ट कार में तीन बार फायर कर फरार हो गए। फायर से गाड़ी के पीछे का शीशा टूट गया है। घटना को अंजाम देकर वैगन आर कार सवार युवक बसंत जाटिका की तरफ भाग गए। पीड़ित की शिकायत के अनुसार गाड़ी का नंबर सीजी 10 एसी 9815 है। पीड़ित ने थाने में शिकायत करते हुए बताया है कि उक घटना से उनका पूरा परिवार दहशत में है। उसने हमलावरों की जल्द गिरफ्तारी की मांग पुलिस से की है।

भागने वाले युवक वैगन आर कार में सवार थे। पीड़ित ने उनके भागने का वीडियो बनाया है और शिकायत पुलिस में दर्ज कराई है। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के अनुसार सूर्या विहार निवासी शुभम साहू ने सरकंडा

गए। पीड़ित की शिकायत के अनुसार गाड़ी का नंबर सीजी 10 एसी 9815 है। पीड़ित ने थाने में शिकायत करते हुए बताया है कि उक घटना से उनका पूरा परिवार दहशत में है। उसने हमलावरों की जल्द गिरफ्तारी की मांग पुलिस से की है।

बीजेपी में शामिल हुए 150 युवा

बृजमोहन अग्रवाल ने दिलाई पार्टी की सदस्यता



रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) छत्तीसगढ़ में आगामी दिनों में विधानसभा और लोकसभा चुनाव होना है, जिसके चलते सियासी गलियारों में सरगमी बढ़ी हुई है। केंद्रीय स्तर के नेता भी लगातार छत्तीसगढ़ का दौरा कर रहे हैं। लेकिन सियासी सरगमी के बीच छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से एक बड़ी खबर सामने आई है। खबर है कि करीब 150 युवाओं ने भाजपा का दामन थामा है।

मिली जानकारी के अनुसार राजधानी रायपुर में 150 युवाओं ने भाजपा में प्रवेश किया है। बताया जा रहा है कि सभी युवाओं को सांसद सुनील सोनी, पूर्व मंत्री और विधायक बृजमोहन अग्रवाल और खूबचंद पारख ने सदस्यता दिलाई है। वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ में दल बदल का सिलसिला लगातार जारी है। प्रदेश के बस्तर, कवर्धा सहित अन्य जिलों में भाजपा नेताओं ने कांग्रेस का दामन थामा है। तो वहीं कुछ जिलों में कांग्रेस नेताओं ने भी भाजपा की सदस्यता ली है।

बारिश पर लगा ब्रेक, उमस के साथ गर्मी बढ़ने की संभावना

रायपुर, 02 जुलाई 2023 (ए।) छत्तीसगढ़ में बीते दिनों हुई बारिश से तापमान में गिरावट दर्ज की गई थी। अब फिर से बारिश में ब्रेक लग गया है। मौसम विभाग की मानें तो प्रदेश में अगले 3 दिनों तक उमस के साथ गर्मी बढ़ने की संभावना है। जिससे अधिकतम तापमान में भी वृद्धि देखी जा सकती है। वहीं आज सरगुजा और बस्तर संभाग समेत इससे लगे जिलों में बारिश होने के आसार हैं। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक ये चक्रिय चक्रवाती और ट्रॉपिका का असर है।



बता दें कि राजधानी में आज सुबह से ही तेज धूप निकली हुई है। तापमान में वृद्धि देखी जा रही है।

बीते दिनों हुई बारिश से मौसम अच्छा हो गया था, लेकिन अब फिर से तेज धूप का सामना करना पड़ सकता है।

सब्जियों के दाम बढ़ें
बारिश की वजह से सब्जियों के दाम भी बढ़ गए हैं। बारिश के कारण टमाटर के दाम सात पर ट्रेनों की आवाजाही शुरू होने से यात्रियों को काफी सुविधा हो रही है। फूट ओवरब्रिज भी बनकर तैयार है। जल्द ही इसे भी शुरू कर दिया जायेगा।

दाम भी बढ़े. लहसुन, फूलगोभी के भी रेट बढ़ गए हैं। सब्जियों की कीमतें

टमाटर 80 से 100 रुपए किलो
अदरक 60 रुपये पाव 240 रुपए किलो
धनिया 50 रुपये पाव 200 रुपये किलो
गोभी 100 रुपये किलो
परवल 80 रुपये किलो
मूंगा 80 रुपये किलो
भिंडी 90 रुपये किलो।